पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार वार्षिक शुल्क : 60 रुपए

मातृवन्दना

भाद्रपद, कलियुगाब्द 5115, सितम्बर, 2013

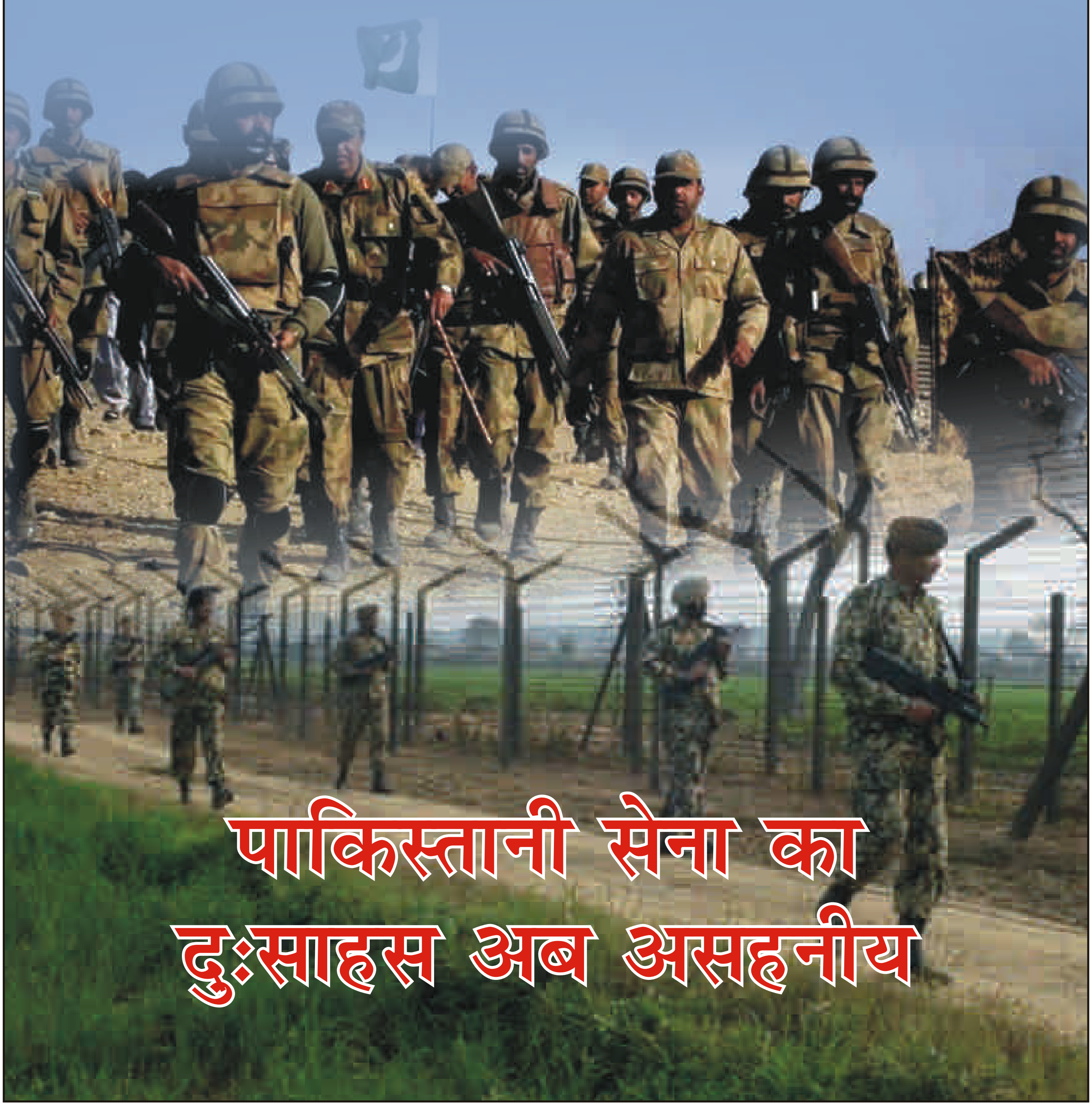

पाकिस्तानी सेना का दु:साहस अब असहनीय

15 अगस्त के सुअवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहन वैद्य राष्ट्रीय ध्वज को नमन करते हुए।

डॉ. हेडगेवार भवन, शिमला में 15 अगस्त के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में उपस्थित नन्हे बच्चे।

15 अगस्त के सुअवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक श्री मोहन भागवत जी ध्वजारोहण करते हुए।

भारत परिक्रमा पद यात्रा के एक वर्ष पूरे होने पर राजस्थान के बदनौर गांव में श्री सीताराम जी का स्वागत करते ग्रामीण एवं मुस्लिम प्रतिनिधियों से चर्चा करते हुए।

नाभिषेको न संस्कारो सिंहस्य क्रियते मृगैः।
विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता॥

भावार्थ : वन के राजा शेर का न अभिषेक किया जाता है और न ही कोई संस्कार। वह तो अपने पराक्रम के बल बूते ही जंगल का राजा होता है।

वर्ष : 13 अंक : 09
मातृवन्दना
मासिक
भाद्रपद-आश्विन, कलियुगाब्द
5115, सितम्बर, 2013

पुंछ में पाकिस्तानी हमला...8

सोनिया गांधी की सरकार की मजबूरी है या अमेरिकी हितों की रक्षा करने की उसकी सोची-समझी विदेश नीति कि उसे सब कुछ जानते बूझते भी यह कहना पड़ रहा है कि भारतीय सेना के गश्ती दल पर हमला पाकिस्तान की सेना ने नहीं बल्कि उसकी वर्दी पहने आतंकवादियों ने किया था। ताज्जुब तो यह है कि सेना तो यह कह रही है कि हमला पाक सैनिकों का था, लेकिन दिल्ली में बैठे एंटनी-सलमान इसे महज आतंकवादी हमला बताते रहे।

सम्पादकीय	नापाक हरकतों से बाज आए पाकिस्तान	5
प्रेरक प्रसंग	यह कैसी धर्म साधना	6
चिन्तन	सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति	7
आवरण	पाकिस्तानी सेना की करतूतों को समझें	9
संगठनम्	सरसंघ चालक ने फहराया तिरंगा	13
देवभूमि	कर्मचारी-आयकरदाता खाद्यसुरक्षा से बाहर	15
देश-प्रदेश	माँ वैष्णव देवी के सिक्के का विरोध	16
घूमती कलम	केदारनाथ की परम्परागत पूजा नेपाल में	18
युवापथ	वास्तुकला में रोजगार की संभावनाएं	20
दृष्टि	बेटियों के नाम के पौधे	21
काव्य जगत	मैं भारत हूं	22
संस्कृतम्	थाईलैंड में अलख जगाता संस्कृत अध्ययन केन्द्र	24
कृषि	उजड़ी फसलें तबाह किसान	25
प्रतिक्रिया	आर.टी.आई. से पार्टियों में खलबली	26
सार्द्धशती	स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन	27
समसामयिकी	राष्ट्रीय एकता सम्प्रभुता पर पड़ सकता है असर	28
विविध	भारत में रहने वाला हर मतावलम्बी हिन्दू	29
पुण्यस्मरण	धर्मग्रन्थों के प्रसारक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार	31
विश्व दर्शन	रूस को अल्पसंख्यकों की आवश्यकता नहीं	32
बाल जगत	पिंजरे के पंछी	34

परामर्शदाता
सुभाष चन्द्र सूद

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर

वार्षिक शुल्क
साठ रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादकः डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

पाठकों के पत्र..

मातृवन्दना के जून 2013 के अंक में प्रकाशित कविता 'मेरा भारत महान' पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। लेखक ने कविता बहुत सुन्दर प्रस्तुत की है। प्राचीन इतिहास के आश्चर्यजनक तथ्यों को, जो हम सबकी जानकारी में होते हुए भी हम इन्हें इतना महत्व नहीं दे पाते। किन्तु प्रस्तुत तथ्य, 'फायर प्रूफ लेडी (होलिका), वाटर प्रूफ बिल्डिंग (शेषनाग), प्रथम पत्रकार (नारद) एवं कमेंटेटर (संजय) के अतिरिक्त गणेश जी के ऑपरेशन की घटना का सार्थक आइडिया भारत द्वारा दुनियां को दिये जाने का विचार लेखक ने कविता में जिस सहज ढंग से प्रस्तुत किया है, वह बहुत ही सराहनीय है। यह कविता मैंने अन्य मित्रों को पढ़ाई, सभी ने कविता में प्रस्तुत प्रसंगों को बहुत सराहा है।' इसकी प्रस्तुति के लिये लेखक एवं मातृवन्दना को साधुवाद, धन्यवाद व बधाई।

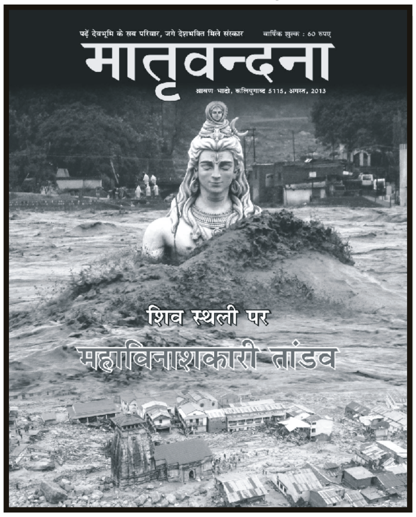

– **लेखराम शर्मा**, पुरानी मंडी, मंडी

मातृवन्दना में प्रकाशित होने वाली लेखन सामग्री राष्ट्र प्रेम से प्रेरित रहती हैं। राष्ट्र और इसकी अखंडता सर्वोपरि है। लेकिन राष्ट्रीय अखंडता के साथ-साथ खुशहाल भारत भी हमारा ध्येय है। इसलिये खुशहाली और राष्ट्र की समृद्धि हेतु सर्वधर्म सम्मान होना जरूरी है। विश्व के समृद्ध देश वे हैं जो सब धर्मों का सम्मान करने की राह पर चल रहे हैं। भारत को विश्व के विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा होना है तो अपने पड़ोसी देशों पर न्यायपूर्ण प्रभाव जमाना होगा। भारत को कोई खींच कर विश्व शक्तिमान देशों की कतार में खड़ा नहीं करेगा, हमें स्वयं के प्रयत्नों से ऊंचाई छूनी है। हमें सामाजिक भेदभाव मिटाकर अतुलनीय एवं समरसता भरा भारत बनाना होगा।

– **केसी शर्मा**, गग्गल, कांगड़ा

मातृवन्दना पिछले 17 वर्षों से राष्ट्रीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विचारों को सम्पूर्ण हिमाचल के दूरदराज पहाड़ी क्षेत्रों में पहुंचाने में सतत प्रयासरत है। देवभूमि, देश-प्रदेश, कृषि जगत, घूमती कलम आदि स्तम्भ विशेष रूप से हिमाचल पुनः अन्य राज्यों के विभिन्न क्षेत्रों के समाचार, सूचनाएं एवं जानकारियां पाठकों को प्रदान करते हैं। कृषि जगत में लघु किसानों के लिये विशेष जानकारी उपलब्ध रहती है। जैविक खेती के लिये भी प्रेरणा दी जाती है। डॉ. हेडगेवार सेवा समिति भारत के सुदूर वनवासी एवं जनजातीय क्षेत्रों में कृषि सुधार प्रकल्प चलाए हुए है, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

कृपया कृषि के विकास में मनरेगा का क्या योगदान है?क्या कृषि क्षेत्र इस योजना से किसान पर्याप्त लाभ उठा रहे हैं या नहीं अथवा इसके माध्यम से किस प्रकार और अधिक कृषि को बढ़ावा मिल सकता है, इस सम्बंध में लेख छपवाकर पाठकों को अवश्य जानकारी प्रदान करें।

–**के.एस. कौंडल**, ऊना

बिजली+बादल = सावन आया;
बारात+बाजा = दूल्हा आया;
फूल+नजारे = बसंत आया;

ईश्वर का दिया कभी अल्प नहीं होता;
जो टूट जाये वो संकल्प नहीं होता;
हार को लक्ष्य से दूर ही रखना;
क्योंकि जीत का कोई विकल्प नहीं होता!

इस अंक के उत्तर :

प्रश्नोत्तरी : उत्तर : 1. इम्पीरियल बैंक, 2. 9 अगस्त, 1925, 3. मैत्रेय, 4. 82.5, 5. तक्षशिला, 6. समर्थ गुरु रामदास, 7. 1920, 8. प्रीणी में, 9. लम्बलू नामक स्थान हमीरपुर में, 10. दयोली (बिलासपुर)

स्मरणीय दिवस (सितम्बर)

शिक्षक दिवस	5 सितम्बर
गणेश चतुर्थी	9 सितम्बर
ऋषि पंचमी	10 सितम्बर
हिन्दी दिवस	14 सितम्बर
स. भगत सिंह जयंती	28 सितम्बर

नापाक हरकतों से बाज आए पाकिस्तान

सदियों की गुलामी के पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्ति के समय मजहब के आधार पर भारत देश का हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के रूप में बंटवारा नितांत दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं अपितु अत्यंत दु:खदायी भी था। राजसत्ता की महत्त्वाकांक्षा पालने वाले राजनेताओं ने सम्भवत: कभी यह सोचा भी न होगा कि भविष्य में इसका क्या खामियाजा भुगतना पड़ेगा। दोनों देशों के अस्तित्व का आधार रक्तरंजित विभाजन बना। उसके ठीक बाद ही पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला बोल दिया। 27 अक्तूबर, 1947 को भारतीय सेना श्रीनगर पहुंची और एक महीने के भीतर पाकिस्तान को मुंहकी खानी पड़ी। तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल के विरोध के बावजूद प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने अपनी धर्मनिरपेक्ष छवि बनाए रखने के लिये सेना की कमान शेख अब्दुल्ला को सौंप दी। सेना कश्मीर का दो तिहाई क्षेत्र जीत चुकी थी किन्तु शेख अब्दुल्ला ने सेना को रोककर गिलगित की ओर मोड़ दिया जिसके परिणामस्वरूप भारत का 78,114 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पाकिस्तान के कब्जे में आ गया। यह वही क्षेत्र है जहां भारत को तबाह करने के लिये आतंकी प्रशिक्षण शिविर चलाए जाते हैं।

भारत निस्संदेह अपने पड़ोसी देशों के साथ मैत्री सम्बंध बनाना चाहता है किन्तु पाकिस्तान वह देश है जो निरंतर शत्रुता का विषवमन करते हुए ही अपने आपको जीवित रखे हुए है। 1965 और 1971 का युद्ध, अनन्तर कारगिल युद्ध, सर्वत्र उसे शर्मनाक पराजय का मुंह देखना पड़ा। प्रत्यक्ष युद्धों में पराजित होने के बाद उसने अपनी रणनीति बदल दी है। आतंकवाद को प्रश्रय देकर वह हमारे देश में अशांति फैलाना चाहता है। साथ ही उसकी सेना जो वहां की सत्ता से अधिक प्रबल है, भारतीय सीमा में घुसकर कभी हमारे सैनिकों के सिर काट कर ले जाती है कभी अचानक अंधाधुंध फायरिंग कर संघर्ष विराम का उल्लंघन करती है। इस बार भी 5-6 अगस्त की मध्य रात्रि में पाक सेना ने पांच भारतीय सैनिकों की हत्या कर दी। रक्षामंत्री ए.के. एंटनी ने पहले तो इसे सेना के वेष में आतंकवादियों की वारदात कहा। अन्तत: सर्वत्र जब उनके बयान की आलोचना की गई तब उन्हें यह मानना पड़ा कि सेनाध्यक्ष का बयान सही है कि आक्रमण पाकिस्तानी सैनिकों ने ही किया था।

यह बड़े खेद का विषय है कि वर्तमान केन्द्रीय सरकार पाकिस्तानी सेना की इन निम्न हरकतों पर पर्दा डाल कर क्यों पाकिस्तान का बचाव करना चाहती है? सम्भवत: अमेरिका के दबाव में ही यह सरकार ढुलमुल नीति अपनाए हुए है। पाकिस्तान के साथ सार्थक बातचीत का वातावरण तब तक नहीं बन सकता जब तक उसकी विश्वसनीयता सामने उभर कर नहीं आती। जिसका अस्तित्व केवल प्रतिशोध पर टिका हो, जहां नई पीढ़ी की बचपन से ही भारत और हिन्दू धर्म के प्रति घृणा और प्रतिशोध का पाठ पढ़ाया जा रहा हो, जहां के सत्ताधारी आज शांति की बात करते हों और कल उनकी सेना भारतीय सीमा में घुसकर भारतीय सैनिकों पर वार करती हो और बार-बार नियंत्रण रेखा का अतिक्रमण कर नापाक हरकतें करती हो तो ऐसे देश पर कैसे विश्वास किया जा सकता है?

अपनी विश्वसनीयता जाहिर करने के लिये पाकिस्तान को अपनी आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाना होगा। ठोस पहल कर आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को समाप्त कर आतंकी संगठनों को प्रश्रय देने से इन्कार करना होगा। निरंकुश सेना को अपने नियंत्रण में लेना होगा और अपनी साकारात्मक वैचारिक स्पष्टता प्रदर्शित करनी होगी और उसके अनुरूप उसे अपने आपको प्रमाणित करना होगा। इधर इस ओर हमारे देश के कर्णधारों को भी बिना किसी वाह्य और आंतरिक दबाव के कठोर निर्णय लेने होंगे। ❑

प्रेरक प्रसंग

काँच की बरनी और दो प्याले चाय

जीवन में जब सब कुछ एक साथ और जल्दी-जल्दी करने की इच्छा होती है, सब कुछ तेजी से पा लेने की इच्छा होती है, और हमें लगने लगता है कि दिन के चौबीस घंटे भी कम पड़ते हैं, उस समय यह बोध कथा, 'काँच की बरनी और दो प्याला चाय' हमें पढ़ लेनी चाहिये।

दर्शनशास्त्र के एक प्रोफेसर कक्षा में आये और उन्होंने छात्रों से कहा कि वे आज जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पाठ पढ़ाने वाले हैं। उन्होंने अपने साथ लाई एक काँच की बड़ी बरनी मेज पर रखी और उसमें टेबल टेनिस की गेंदें डालने लगे और तब तक डालते रहे जब तक कि उसमें एक भी गेंद समाने की जगह नहीं बची...

उन्होंने छात्रों से पूछा-क्या बरनी पूरी भर गई?

हाँ... आवाज आई...

फिर प्रोफेसर साहब ने छोटे-छोटे कंकर उसमें भरने शुरु किये, धीरे-धीरे बरनी को हिलाया तो काफी सारे कंकर उसमें जहां जगह खाली थी, समा गए, फिर से प्रोफेसर साहब ने पूछा, क्या अब बरनी भर गई है, छात्रों ने एक बार फिर हाँ.... कहा

अब प्रोफेसर साहब ने रेत की थैली से हौले-हौले उस बरनी में रेत डालना शुरु किया, वह रेत भी उस जार में जहाँ संभव था बैठ गई, अब छात्र अपनी नादानी पर हँसे....

फिर प्रोफेसर साहब ने पूछा, क्यों अब तो यह बरनी पूरी भर गई ना?

हाँ...अब तो पूरी भर गई है...सभी ने एक स्वर में कहा...

सर ने टेबल के नीचे से चाय के दो प्याले निकालकर उसमें की चाय जार में डाली, चाय भी रेत के बीच स्थित थोड़ी सी जगह में सोख ली गई...

प्रोफेसर साहब ने गंभीर आवाज में समझाना शुरु किया-इस काँच की बरनी को तुम लोग अपना जीवन समझो.. .टेबल टेनिस की गेंदें सबसे महत्त्वपूर्ण भाग अर्थात भगवान, परिवार, बच्चे, मित्र, स्वास्थ्य और शौक हैं, छोटे कंकर मतलब तुम्हारी नौकरी, कार, बड़ा मकान आदि हैं, और रेत का मतलब, और भी छोटी-छोटी बेकार सी बातें, मनमुटाव, झगड़े हैं... अब यदि तुमने काँच की बरनी में सबसे पहले रेत भरी होती तो टेबल टेनिस की गेंदों और कंकरों के लिये जगह ही नहीं बचती, या कंकर भर दिये होते तो गेंदें नहीं भर पाते, रेत जरूर भर सकती थी...ठीक यही बात जीवन पर लागू होती है....यदि तुम छोटी-छोटी बातों के पीछे पड़े रहोगे और अपनी ऊर्जा उसमें नष्ट करोगे तो तुम्हारे पास मुख्य बातों के लिये अधिक समय नहीं रहेगा... मन के सुख के लिये क्या जरूरी है ये तुम्हें तय करना है। अपने बच्चों के साथ खेलो, बगीचे में पानी डालो, सुबह पत्नी के साथ घूमने निकल जाओ, घर के बेकार सामान को बाहर निकाल फेंको, मेडिकल चेक-अप करवाओ.... टेबल-टेनिस की गेंदों की फिक्र पहले करो, वही महत्त्वपूर्ण है.... पहले तय करो कि क्या जरूरी है.... बाकी सब तो रेत है...

छात्र बड़े ध्यान से सुन रहे थे...

अचानक एक ने पूछा, सर लेकिन आपने यह नहीं बताया कि 'चाय के दो प्याले' क्या हैं?

प्रोफेसर मुस्कुराये, बोले...मैं सोच ही रहा था कि अभी तक ये सवाल किसी ने क्यों नहीं किया... इसका उत्तर यह है कि... जीवन हमें कितना ही परिपूर्ण और संतुष्ट लगे, लेकिन अपने खास मित्र के साथ दो प्याले चाय पीने की जगह हमेशा होनी चाहिये। ❑

यह कैसी धर्म-साधना?

एक व्यक्ति ने किसी साधु से कहा, 'मेरी पत्नी धर्म-साधना में श्रद्धा नहीं रखती। यदि आप उसे थोड़ा समझा दें तो बड़ा अच्छा हो।'

साधु बोला, 'ठीक है।'

अगले दिन सवेरे ही वह साधु उसके घर गया। पति वहां नहीं था। उसने उसके सम्बंध में पत्नी से पूछा। पत्नी ने कहा, 'जहां तक मैं समझती हूं, वह इस समय चमार की दुकान पर झगड़ा कर रहे हैं।'

पति पास के पूजाघर में माला फेर रहा था। उसने पत्नी की बात सुनी। उससे यह झूठ सहा नहीं गया। बाहर आकर बोला, 'यह बिल्कुल गलत है। मैं पूजाघर में था।'

साधु हैरान हो गया। पत्नी ने यह देखा तो पूछा, 'सच बताओ कि क्या तुम पूजाघर में थे? क्या तुम्हारा शरीर पूजाघर में, माला हाथ में और मन और कहीं नहीं था।'

पति को होश आया। पत्नी ठीक कह रही थी। माला फेरते-फेरते वह सचमुच चमार की दुकान पर ही चला गया था। उसे जूते खरीदने थे और रात को ही उसने अपनी पत्नी से कहा था कि सवेरा होते ही खरीदने जाऊंगा। माला फेरते-फेरते वास्तव में उसका मन चमार की दुकान पर पहुंच गया था और चमार से जूते के मोल-तोल पर कुछ झगड़ा हो रहा था।

विचार को छोड़ो और निर्विचार हो जाओ तो तुम जहां हो, वहीं प्रभु का आगमन हो जाता है। ❑

सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति

❑ वीना वर्मा

आज के इस युग में भारत के दस प्रतिशत नागरिक भी सनातन नियमों को अपने जीवन में उतार लें तो घर परिवार और समाज ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश की काया ही बदल जाएगी

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिये अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। किसी भी देश के उत्थान के लिये वहां के नागरिकों का सहयोग अति अनिवार्य है। जहां विश्व के अन्य देश दिन प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर हैं वहीं भारत के नागरिक 'रोटी कपड़ा और मकान' के लिये जूझ रहे हैं। जहां बीस प्रतिशत नागरिकों के पास करोड़ों की सम्पति है वहीं अस्सी प्रतिशत नागरिकों का अपना कोई वजूद नहीं है। अगर आज के इस युग में भारत के दस प्रतिशत नागरिक भी सनातन नियमों को अपने जीवन में उतार लें तो घर परिवार और समाज ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश की काया ही बदल जाएगी। प्रत्येक मनुष्य को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं होना चाहिये परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिये कि हमारे आस-पास रहने वाले एवं कार्य करने वाले समान रूप से उन्नति कर रहे हैं अथवा नहीं। अगर दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यह उचित होगा कि हमारे द्वारा किये गए कार्य से किसी का अहित तो नहीं हो रहा क्या वे भी उन्नति कर रहे हैं अथवा नहीं। लेकिन बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आज व्यक्ति अपने दुख से इतना दुखी नहीं है जितना दूसरे के सुख से है। वह अपना सारा सामर्थ्य दूसरे के दमन में समाप्त कर रहा है। परिणामस्वरूप, समाज का वर्तमान स्वरूप हमारे सामने है। आज, हजारों लोग आत्महत्या कर रहे हैं। एक-दूसरे को मार रहे हैं, प्रकृति में अपने स्वार्थ के लिये परिवर्तन कर प्रलय को बुलावा दे रहे हैं। यह सब हमारे स्वार्थ व अज्ञानता का परिणाम है और आज अगर हमें कोई इस भयानक समस्या से कोई बचा सकता है तो वह है हमारा नैतिक आचरण। सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझना अर्थात् सबका भला सोचना द्वेष न करना। उन्नति का सही अर्थ है- शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और मानसिक उन्नति। यह हमारा परम कर्तव्य बनता है कि हमारा प्रत्येक कार्य समाज और देश की उन्नति में सहायक हो। ❑

धर्म हमें ईश्वर के पास ले जाता है

जो मनुष्य अपने धर्म और ईश्वर पर से विश्वास उठा लेता है वह मनुष्य आत्महत्या के मार्ग को अपनाता है। धैर्यवान हम किसे कहते हैं?धैर्यवान वह जो अपने धर्म और ईश्वर पर अटूट विश्वास रखता है। ईश्वर को हमने देखा नहीं है। धर्म हमें दिखाई देता है। धर्म मार्ग अपनाकर हम धर्म का पालन करते हैं। धर्म हमें हिंसक होने से रोकता है। मांस, शराब पीने खाने से रोकता है। सत्य बोलना चाहिए, झूठ बोलने से स्वयं के साथ धर्म को भी क्षति पहुंचती है। धर्म की एक विशाल पाठशाला है उस पाठशाला में जो अव्वल रहेगा, अनुशासित रहेगा वह श्रेष्ठ मनुष्य माना जाएगा। शेष सामान्य लोग सारी जिन्दगी श्रेष्ठ मनुष्य बनने के लिये प्रयत्नशील रहेंगे, यह आदेश धर्म देता है। जो धर्म के आदेशों का पालन नहीं करता धर्म उसे त्याग देता है और कहता है कि तुम मेरे बिना जी नहीं सकते, धर्म रहित इन्सान का उद्धार नहीं होता उसे मोक्ष प्राप्त नहीं होता। इसलिये धर्म को अपनाओ।

धर्म हमें प्रभु से मिलाता है उसके दर्शन कराता है! धर्म मार्ग सीधा ईश्वर के चरणों में जाकर समाप्त होता है। प्रभु यानी ईश्वर अर्थात् हरिओम यह मनुष्य रूपी नहीं है लेकिन सारे संसारी पदार्थों से अगर कोई अधिक सुन्दर है तो भगवान इसलिये कहा है। सत्यं शिवं सुन्दरम् अर्थात् शिव ही सत्य है सुन्दर है। ईश्वर के अनेकों नाम हैं।

जिस सत्य का हमें पग पग में अहसास होता है सारा ब्रह्मांड उसी परमसत्य से लिप्त है। तभी तो कहते हैं कण-कण में भगवान है। सारे सत्य परम सत्य में लीन हो जाते हैं। ईश्वर का कोई रूप नहीं है लेकिन प्राकृतिक संरचना के रचयिता प्रभु के अनेकों रूप हैं। पहाड़, नदियां, सागर, पवन, सूर्य प्रकाश अंधेरा, आकाश-धरती, पाताल, विनाश, प्रलय जिसे हम अच्छा बुरा कहते हैं ये तमाम प्रभु के ही नाम और काम हैं। जहां पर हमारी समझ सोच समाप्त हो जाए उसके पश्चात् ही ईश्वर का बोध शुरू हो जाता है। तभी हार थक कर हम कहते हैं हे प्रभु तेरी इच्छा!❑ **-के.सी. शर्मा, कांगड़ा**

पुँछ में पाकिस्तानी हमला और रक्षामंत्री का आचरण

❑ **डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री**

जम्मू कश्मीर में पुँछ सेक्टर में पाकिस्तानी सैनिकों ने पांच और छह अगस्त की मध्य रात्रि को नियंत्रण रेखा के भीतर गश्त लगा रही भारतीय सैनिक टुकड़ी पर आक्रमण किया और गोलाबारी में पाँच भारतीय सैनिक शहीद हो गए। छट्‌ठा सैनिक गंभीर अवस्था में अस्पताल में है। भारतीय सेना का मानना है कि यह आक्रमण पाकिस्तानी सेना के सीमा एक्शन बल ने किया और इसके लिये पूरी तैयारी की गई थी।

यह इस आक्रमण की पहली कड़ी थी। यह भारतीय सेना पर आक्रमण था। लेकिन इस आक्रमण की दूसरी कड़ी थी, भारतीय चेतना पर आक्रमण । यह आक्रमण भारत के ही रक्षा मंत्री ए.के. एंटनी ने भारतीय संसद में ही पहले आक्रमण का स्पष्टीकरण देते हुए किया। एंटनी ने पहले आक्रमण पर वक्तव्य देते हुए बताया कि भारतीय सैनिकों पर यह आक्रमण आतंकवादियों और पाकिस्तानी सेना की वर्दी पहने हुए कुछ लोगों ने किया। भारतीय सैनिकों की शहादत से शोक में डूबी समस्त भारतीय चेतना पर यह दूसरा आक्रमण था, जिसे भारत के ही रक्षा मंत्री ने अंजाम दिया था । एंटनी के बयान का अर्थ साफ था कि हमला करने वाले आतंकवादी थे, जो पाकिस्तान सेना की वर्दी पहन कर आये थे। भारतीय गश्ती दल पर हमला पांच-छह अगस्त की रात को एक-दो बजे के बीच हुआ था। बचाव दल प्रात: पाँच बजे के बाद शहीद सैनिकों के शवों को ढूँढ पाया। एक सैनिक जो गंभीर रुप से घायल है वह अभी हस्पताल में है। अभी शहीदों का दाह संस्कार भी नहीं हुआ था कि एंटनी इस आक्रमण से पाकिस्तान को बचाने में जुट गए।

पहले आक्रमण यानि पाकिस्तानी सेना के आक्रमण के आघात को तो देश फिर भी सह लेता क्योंकि सभी जानते हैं कि भारतीय सेना पाकिस्तान को धूल चटाने में सक्षम है लेकिन सोनिया गांधी की सरकार द्वारा भारत के आत्मसम्मान और उसकी चेतना पर किया गया यह दूसरा आक्रमण तो नाकाबिल-ए-बर्दाश्त है। इसीलिये एंटनी द्वारा पाकिस्तान की सेना के लोगों को, पाकिस्तान की सेना की वर्दी पहने हुए कुछ लोग कह कर, बहुत ही होशियारी से पाकिस्तान को बरी करने की चाल से बवंडर मच गया। भावनाएं इस कदर घायल हुई कि संसद का चलना मुश्किल हो गया।

पहले आक्रमण यानि पाकिस्तानी सेना के आक्रमण के आघात को तो देश फिर भी सह लेता क्योंकि सभी जानते हैं कि भारतीय सेना पाकिस्तान को धूल चटाने में सक्षम है लेकिन सोनिया गांधी की सरकार द्वारा भारत के आत्मसम्मान और उसकी चेतना पर किया गया यह दूसरा आक्रमण तो नाकाबिल-ए-बर्दाश्त है । इसीलिये एंटनी द्वारा पाकिस्तान की सेना के लोगों को, पाकिस्तान की सेना की वर्दी पहने हुए कुछ लोग कह कर, बहुत ही होशियारी से पाकिस्तान को बरी करने की चाल से बवंडर मच गया। भावनाएं इस कदर घायल हुई कि संसद का चलना मुश्किल हो गया। आखिर यूपीए सरकार सीमा पर बार-बार पाकिस्तानी हमलों और भारतीय सैनिकों की हत्याओं को देखते हुए भी पाकिस्तान का बचाव क्यों करना चाहती है? इस घटना के कुछ समय बाद पाकिस्तान सरकार ने इस में किसी भी तरह से पाकिस्तानी सेना का हाथ होने से इन्कार कर दिया। वैसे उसे इसकी जरूरत नहीं थी, क्योंकि उसकी ओर से भारत के रक्षा मंत्री ने स्वयं ही भारतीय संसद में इस घटना में पाकिस्तानी हाथ होने का अपरोक्ष रूप से खंडन कर दिया था और संसद के बाहर विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद घूम-घूम कर एंटनी के बयान का प्रचार कर रहे थे। एंटनी और सलमान की इस जोड़ी ने इस पूरे कांड से पाकिस्तान को बरी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

सोनिया गांधी की पार्टी और उसकी सरकार की चाल, चरित्र और आचरण को नजदीक से समझने बूझने वाले कुछ लोगों का कहना है कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अगले महीने न्यूयार्क में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से बातचीत करने वाले हैं। उस बातचीत में शुरू होने से पहले ही खटास न पड़ जाए, इसे ध्यान में रखते हुए घटना से पाकिस्तान को निकालने के लिये 'बायपास सर्जरी' की गई है। यदि भारत सरकार इस कांड में पाकिस्तानी सेना की शमूलियत को स्वीकार कर लेती तो हो सकता था जनमत के दबाव में

मनमोहन सिंह को नवाज शरीफ से बातचीत ही रद्द करनी पड़ती। भारत सरकार ने इस प्रस्तावित बातचीत को बचाने के लिये फिलहाल पाकिस्तानी सेना को बचाना जरूरी समझा।

पाकिस्तान को लेकर सोनिया गांधी की सरकार की इस नीति का एक कारण अमेरिका भी है। अमेरिका भारत में अपने समर्थक समूह की सहायता से दिल्ली की विदेश नीति या कम से कम पाकिस्तान से ताल्लुक रखने वाली नीति को तो अपने हितों की रक्षा के लिये मोड़ ही सकता है। अमेरिका की चिंता अफगानिस्तान है। वहाँ से अमेरिकी सैनिकों के निकल जाने के बाद, उस देश के फिर से तालिबान के हाथ में पड़ जाने का खतरा दिखाई दे रहा है। अफगानिस्तान पर फिर से इस्लामी आतंकियों का कब्जा होने का अर्थ है, अमेरिका के लिये फिर से नई सिरदर्दी। वैसे वाशिंगटन ने इसे भी अपने तरीके से सुलझाने की कोशिश की है। अच्छे तालिबान और बुरे तालिबान का सिद्धांत अमेरिका ने इसीलिये निकाला था ताकि जो तालिबान अमेरिका का साथ देने को तैयार हो जाएं, उन्हें अच्छे का तगमा देकर काबुल की सत्ता सौंप दी जाए और उन्हीं के हाथों बुरे तालिबान को निपटाया जाए। लेकिन लगता है अमेरिका तालिबान में कुछ को अच्छे बना नहीं पाया। अब उसे पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को एक साथ साधना है, ताकि अफगानिस्तान से चले जाने के बाद दोनों मिलकर तालिबान को काबुल में जाने से रोकें।

पाकिस्तानी सेना की करतूतों को समझें

❑ शिवदान सिंह

कश्मीर के पुंछ सेक्टर में पाकिस्तानी हमले में पांच भारतीय जवानों के शहीद होने की घटना अपवाद नहीं है। इस वर्ष जनवरी में पुंछ सेक्टर में ही पाकिस्तानी सैनिकों ने हमारी सीमा में घुसकर दो भारतीय जवानों के सिर काट लिये थे। पाकिस्तानी सेना अपनी इन करतूतों पर आतंकवादियों की आड़ लेकर पर्दा डालने की कोशिश करती है। मसलन, कारगिल जैसे बड़े ऑपरेशन को आज तक पाकिस्तानी कश्मीरी आतंकवादियों का हमला ठहराते हैं। असल में यह पाकिस्तानी सेना की गहरी साजिश है, जिसे समझने की जरूरत है।

जब भी इस तरह की कोई घटना होती है, आवाजें उठने लगती हैं कि हमें पाकिस्तान सरकार से बातचीत बंद कर देनी चाहिये या फिर उसे करारा जवाब देना चाहिये, इत्यादि-इत्यादि। इस बार भी संसद से लेकर सड़क तक यह मुद्दा जोर-शोर से उठाया जा रहा है। असली मुश्किल तो यही है कि पाकिस्तान में बात किससे की जाए? वाकई यह आकलन करने का वक्त है कि पाकिस्तान में सत्ता का असली केन्द्र कहां है।

आगरा शिखर वार्ता के दौरान जनरल परवेज मुशर्रफ ने कश्मीरी आतंकवादियों को स्वतंत्रता सेनानी कहकर उनकी गतिविधियों को सही ठहराने की कोशिश कर सबको हैरत में डाल दिया था। परन्तु मैंने अपने 37 वर्ष के सेना काल में यह देखा है कि अग्रिम क्षेत्रों में, जहां सेना तैनात होती है, सिवाय सेना के और कोई आ जा नहीं सकता, क्योंकि पूरे क्षेत्र को सेना ने अपनी निगरानी में लिया होता है। जहां पर निगरानी नहीं होती, वहां बारूदी सुरंगें बिछी होती हैं और आमतौर पर इस कारण कोई भी आम आदमी इन क्षेत्रों में कदम नहीं रखता। जो कोई इस क्षेत्र में जाता भी है, तो वह सेना की मिलीभगत से ही जा सकता है। इसी कारण जासूसों को या आतंकवादियों को भारतीय सीमा में घुसाने के लिये पाकिस्तानी सेना बेवजह फायरिंग या खराब मौसम का सहारा लेती है। लिहाजा पाकिस्तानी सेना का यह कहना कि भारत के पांच जवानों की मौत में उसका कोई हाथ नहीं है, सरासर झूठ है।

जब भी इस तरह की कोई घटना होती है, आवाजें उठने लगती हैं कि हमें पाकिस्तान सरकार से बातचीत बंद कर देनी चाहिये या फिर उसे करारा जवाब देना चाहिये, इत्यादि-इत्यादि। इस बार भी संसद से लेकर सड़क तक यह मुद्दा जोर-शोर से उठाया जा रहा है। असली मुश्किल तो यही है कि पाकिस्तान में बात किससे की जाए? वाकई यह आकलन करने का वक्त है कि पाकिस्तान में सत्ता का असली केन्द्र कहां है। विभाजन के बाद से आज तक पाकिस्तान लोकतंत्र का दिखावा करता रहा है, पर असली सत्ता सेना के हाथों में ही रही है। फील्ड मार्शल अयूब खां से लेकर जनरल परवेज मुशर्रफ तक वहां पांच सैनिक तानाशाहों ने लम्बे समय तक राज किया है। कुछ समय के लिये अंतर्राष्ट्रीय दबाव में लोकतांत्रिक सरकारें जरूर आती रही हैं, लेकिन वे भी केवल आंतरिक प्रशासन तक ही सीमित रहीं, जबकि पाकिस्तान की विदेश और रक्षा नीति पर हमेशा से सेना का कब्जा रहा है। ❑

लेकिन अमेरिका इतना तो जानता है कि पाकिस्तान तो तालिबान को आगे करके काबुल पर अपना प्रभाव जमाना चाहेगा। अमेरिका के पास उसका भी इलाज है। पाकिस्तान को उदार आर्थिक सहायता तो दी ही जा रही है। साथ ही जम्मू कश्मीर में पाकिस्तानी आतंकवाद की जंग को वाशिंगटन 'वहाँ के लोगों की राजनैतिक समस्या' बता कर पाकिस्तान की परोक्ष सहायता करता रहेगा। उसका सुझाव और तेज हो जाएगा कि इसे दोनों देश आपस में बैठ कर सुलझायें। अमेरिका अपने वैश्विक हितों की रक्षा के लिये पाकिस्तान को साध रहा है और भारत को अमेरिकी हितों की रक्षा के लिये हर हालत में पाकिस्तान से बातचीत ही जारी नहीं रखनी बल्कि उसे नाराज भी नहीं करना है। पाकिस्तान के दोनों हाथों में लड्डू है। वह अमेरिका से जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की राजनैतिक व्याख्या भी करवाता है और सीमा पर भारतीय सैनिकों की गर्दन भी काटता है। सोनिया गांधी की सरकार की मजबूरी है या अमेरिकी हितों की रक्षा करने की उसकी सोची-समझी विदेश नीति कि उसे सब कुछ जानते बूझते भी यह कहना पड़ रहा है कि भारतीय सेना के गश्ती दल पर हमला पाकिस्तान की सेना ने नहीं बल्कि उसकी वर्दी पहने आतंकवादियों ने किया था। ताज्जुब तो यह है कि सेना तो यह कह रही है कि हमला पाक सैनिकों का था, लेकिन दिल्ली में बैठे एंटनी-सलमान इसे महज आतंकवादी हमला बताते रहे। अमेरिका के राष्ट्रपति ने तो रूस के राष्ट्रपति पुतिन से पूर्व प्रस्तावित वार्ता करने से केवल इसलिये इंकार कर दिया क्योंकि रूस ने स्नोडिन को अपने यहाँ राजनैतिक शरण दे दी है। लेकिन भारत के लिये उसके निर्देश अभी भी वही है। कश्मीर को लेकर पाकिस्तान से बातचीत करो और सीमा पर हो रही छोटी मोटी झड़पों को तूल मत दो। पुँछ में पाकिस्तान द्वारा पाँच भारतीय सैनिकों की हत्या पर भी अमेरिका के विदेश मंत्रालय की यही प्रतिक्रिया है कि यह सब कुछ कश्मीर के कारण हो रहा है और दोनों देशों के तुरन्त इस विषय पर बातचीत शुरु कर देनी चाहिये।

अमेरिका अपने वैश्विक हितों की रक्षा के लिये पाकिस्तान को साध रहा है और भारत को अमेरिकी हितों की रक्षा के लिये हर हालत में पाकिस्तान से बातचीत ही जारी नहीं रखनी बल्कि उसे नाराज भी नहीं करना है। पाकिस्तान के दोनों हाथों में लड्डू है। वह अमेरिका से जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की राजनैतिक व्याख्या भी करवाता है और सीमा पर भारतीय सैनिकों की गर्दन भी काटता है।

सोनिया गांधी की पार्टी के आगे दो रास्ते हैं। भारत कह रहा है कि जब तक पाकिस्तान भारत में आतंकवादी गतिविधियाँ बंद नहीं करता तब तक वार्ता नहीं करनी चाहिये। अमेरिका का निर्देश है कि पाकिस्तान से बातचीत जारी रखो। सीमा पर यह जो कुछ हो रहा है वह कश्मीर के कारण है। यह आतंकवाद नहीं है, जनाक्रोश है। जाहिर है सोनिया गांधी की पार्टी ने भारतीय जनमानस के मुकाबले अमेरिका के निर्देश को ज्यादा महत्वपूर्ण समझा। एंटनी-सलमान के संसद में व्यवहार को इसी पृष्ठभूमि में समझना होगा। ये कम्बख्त सी.आई.ए 'आई.एस.आई' जो न करे वही अच्छा। कोहिमा से छपने वाले अंग्रेजी दैनिक की इस पूरे कांड पर सम्पादकीय टिप्पणी द्रष्टव्य है- यूपीए सरकार के अनेक मन हैं लेकिन दिमाग नहीं । अंग्रेजी में-सेवरल माईंडज बट नो हैड। ❑

पाक के खिलाफ जवाबी प्रस्ताव पारित

भारतीय सेना और जनता के खिलाफ पाकिस्तानी संसद के बेबुनियाद आरोपों को भारतीय संसद ने सर्वसम्मति से खारिज कर दिया है। भारतीय संसद ने सर्वसम्मति से जवाबी प्रस्ताव पारित कर दो-टूक कहा कि हिन्दुस्तान या उसके लोग पाकिस्तान के लिये खतरा नहीं हैं, बल्कि पाकिस्तानी जमीन पर फल-फूल रहा आतंकवाद इस पूरे क्षेत्र में शांति के लिये सबसे बड़ा खतरा है। ये इस वर्ष दूसरा जवाबी प्रस्ताव है। इससे पहले पाकिस्तानी संसद ने अफजल के मुद्दे पर प्रस्ताव पारित किया था जिसके जवाब में भारतीय संसद में निन्दा प्रस्ताव पारित किया गया था।

गत माह पाकिस्तान की नेशनल असेंबली ने भारत के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया था। इसमें भारतीय सैनिकों पर 'अकारण आक्रामकता' का आरोप लगाने के साथ ही कश्मीरी लोगों के 'संघर्ष' का समर्थन किया गया था। नेशनल असेंबली ने कहा कि पाकिस्तान कश्मीरियों को राजनयिक, राजनीतिक और नैतिक समर्थन जारी रखेगा। इसके जवाब में लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार और राज्यसभा में सभापति हामिद अंसारी ने पाकिस्तानी नेशनल असेंबली के प्रस्ताव के खिलाफ प्रस्ताव पेश किया, जिसे दोनों ही सदनों में ध्वनिमत से मंजूर किया गया। ❑

किश्तवाड़ के दंगों की जड़ अलगाववाद

❑ बलबीर पुंज

विगत ईद के दिन से जम्मू-कश्मीर के जम्मू क्षेत्र में भड़की हिंसा क्या साम्प्रदायिक थी? किश्तवाड़ के दंगे हिन्दू और मुसलमान समुदाय के बीच किसी टकराव से नहीं भड़के। दंगे इस देश की मिट्टी में रहकर यहीं का खाने वालों की पाकिस्तान परस्ती से भड़के। अलगाववादी लोगों ने कश्मीर की तथाकथित आजादी और पाकिस्तान के समर्थन में नारे लगाए। पाकिस्तानी झंडों के साथ संसद पर हमला करने वाले अफजल गुरु और अन्य आतंकियों के चित्रों वाले पोस्टर लहराए गए। भारत विरोधी नारों का जब राष्ट्रभक्त नागरिकों ने विरोध किया तो दंगे शुरू हो गए। मुस्लिम बहुल इन इलाकों में हिन्दुओं पर हमला किया गया, उनके घर व दुकानों को लूटपाट के बाद आग लगा दी गई। इस पूरे घटनाक्रम के दौरान राज्य के गृहमंत्री सज्जाद अहमद किचलू किश्तवाड़ में मौजूद थे। वह यहां के स्थानीय विधायक भी हैं। गृहमंत्री की मौजूदगी के बावजूद प्रशासन की कई घंटों तक अनुपस्थिति किचलू की भूमिका पर गम्भीर प्रश्न खड़ा करती है। कोई आश्चर्य नहीं कि दंगों के चलते उन्हें अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा है।

जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। यहां राष्ट्रघाती ताकतों को प्रश्रय क्यों मिल रहा है? सरकार ने दंगाइयों को हिंसा ढाने की मोहलत क्यों दी? हिन्दुओं व पुलिस बल पर गोलीबारी करने वालों को क्यों नहीं गिरफ्तार किया गया? जम्मू-कश्मीर आतंकवाद ग्रस्त राज्य है। यहां सेना की मौजूदगी है। क्यों नहीं सेना को तत्काल हालात पर काबू पाने के लिये बुलाया गया?

सरकार ने राष्ट्रविरोधी हरकत पर पर्दा डाले रखने के लिये मीडिया और विपक्षी दलों पर प्रतिबंध लगा दिया। हालात का जायजा लेने दिल्ली से जम्मू पहुंचे भाजपा के वरिष्ठ नेता अरुण जेतली को जम्मू हवाई अड्डे पर घंटों रोके रखा गया और वहीं से उन्हें वापिस दिल्ली भेज दिया गया। स्थानीय नेताओं से जेतली का सम्पर्क न हो सके इसलिये उन नेताओं के हवाई अड्डे प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई। क्यों?क्या जम्मू-कश्मीर किसी वंश विशेष की जागीर है?जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान से जम्मू-कश्मीर में 'दो प्रधान, दो निशान' समाप्त हो गया है किन्तु वहां जिस तरह की अलगाववादी मानसिकता पोषित की जा रही है उसके खात्मे के लिये 'दो विधान' की व्यवस्था भी खत्म करने की आवश्यकता है।

जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। यहां राष्ट्रघाती ताकतों को प्रश्रय क्यों मिल रहा है? सरकार ने दंगाइयों को हिंसा ढाने की मोहलत क्यों दी? हिन्दुओं व पुलिस बल पर गोलीबारी करने वालों को क्यों नहीं गिरफ्तार किया गया? जम्मू-कश्मीर आतंकवाद ग्रस्त राज्य है। यहां सेना की मौजूदगी है। क्यों नहीं सेना को तत्काल हालात पर काबू पाने के लिये बुलाया गया?

वर्तमान सरकार में अलगाववादी और राष्ट्रघाती ताकतों का इतना प्रभाव है कि इन दंगों में घायल हुए देशभक्त जब सरकारी अस्पताल में गए तो उनका इलाज करने से इन्कार कर दिया गया। बाद में सेना ने उन्हें राहत दी और अब सेना के अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। सरकार राज्य के अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान करने में पूरी तरह विफल रही है। किन्तु दिल्ली का सत्ता अधिष्ठान राज्य सरकार की ढाल बन रहा है। कांग्रेस के इन दोहरे मापदंडों के कारण ही पाकिस्तान को देश के अन्दर अलगाववाद की ज्वाला भड़काने और सीमा के अन्दर घुस भारतीय सैनिकों की बर्बरतापूर्वक हत्या करने का दुस्साहस हो रहा है। किश्तवाड़ के दंगे सामुदायिक तनाव का परिणाम नहीं हैं। यह एक सुनियोजित हमला है और जिस तरह चुन-चुन कर हिन्दू घरों, दुकानों, होटलों व प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया गया, उससे साफ है कि दंगाई जम्मू-कश्मीर को कथित काफिरों से मुक्त कराना चाहते हैं। नब्बे के दशक से प्रारम्भ हिंसा के बल पर कश्मीर घाटी से वहां की संस्कृति के मूल वाहक-कश्मीरी पंडितों को खदेड़ भगाया गया। राज्य के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला कुतर्कों के बल पर राष्ट्रघाती मानसिकता का बचाव करना चाहते हैं। वास्तव में उमर अब्दुल्ला वैचारिक धरातल पर अलगाववादियों के साथ ही खड़े दिखते हैं। कुछ समय पूर्व उन्होंने कहा था, 'हमारा भारत के साथ विलय नहीं हुआ है। हमारा सशर्त अर्द्धमिलन हुआ है' उमर अब्दुल्ला ने आगे कहा था, 'कश्मीर मसला दो मुल्कों के बीच का है।... समाधान ढूंढने के लिये नई दिल्ली को यहां के अलगाववादियों के साथ इस्लामाबाद से भी बात करनी होगी।' ❑

धर्म-अर्थ काम-मोक्ष पर आधारित थी प्राचीन शिक्षा पद्धति

विद्याभारती संस्कृति शिक्षण संस्थान लेह लद्दाख के भवन का उद्घाटन मा. गोविन्द शर्मा जी अध्यक्ष विद्याभारती (अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान) की अध्यक्षता में तथा मा. हेमचन्द्र जी क्षेत्रीय संगठन मंत्री उत्तर क्षेत्र की देख रेख में किया गया। इस मौके पर हेमचन्द्र जी ने इस भवन की उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लद्दाख जैसे दुर्गम क्षेत्र में यह संस्थान कार्य को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होगा। इस भवन में चार प्रकार के कार्य किये जाएंगे। 1. भोटी भाषा के ऊपर विशेष ध्यान दिया जाएगा। त्रैमासिक पत्रिका भोटी भाषा में निकाली जाएगी। 2. वर्ष भर में सेमिनार आयोजित किये जाएंगे। 3. एक पुस्तकालय की स्थापना की जाएगी, 4. हिन्दी और भोटी भाषा में कोचिंग की कक्षा आयोजित की जाएगी।

संस्कृति शिक्षण संस्थान लेह लद्दाख के तत्वावधान में एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई जिसका विषय था 'भारतीय शिक्षा पद्धति में विद्यमान चुनौतियां एवं समाधान के विकल्प'।

मा. गोविन्द शर्मा जी ने इस संगोष्ठी की अध्यक्षता की। संगोष्ठी में भिन्न-भिन्न शिक्षण संस्थानों के शिक्षकविदों ने भाग लिया जिसमें केन्द्रीय बौऊ शिक्षण संस्थान के निदेशक वॉंचुक दोरजे नेगी जी ने विशेष रूप से भाग लिया। अपने विचार रखते हुए निदेशक केन्द्रीय बौद्ध शिक्षण संस्थान ने बताया कि प्राचीन काल के समय की शिक्षा नीति को हटा कर लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति को लागू किया गया। 18वीं शताब्दी के बाद हमारी शिक्षा नीति को तोड़-मरोड़ कर आगे लाया गया। प्राचीन शिक्षा पद्धति धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पुरुषार्थों पर आधारित थी। हमारा देश विविध संस्कृति, विविध सभ्यता अनेक विविधता में समाया हुआ है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय खोले जाने चाहिये। भारत कृषि प्रधान देश है। शिक्षा कृषि से भी सम्बंधित होनी चाहिये।

केन्द्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. सी.बी.पी. वर्मा ने कहा कि आज की शिक्षा का निजीकरण, व्यवस्था, पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव इन सब बातों पर आज विचार करने की आवश्यकता है। हमें अपने पाठ्यक्रमों में नैतिक और संस्कारयुक्त विषय शामिल करने चाहिये। जवाहर नवोदय विद्यालय के प्राचार्य श्री रमेश खटकड ने कहा आज हम अंग्रेजी भाषा को अपनी मातृभाषा मान बैठे हैं। हमें अपनी राष्ट्रीय भाषा का विकास करना होगा। स्वतंत्र भारत में अभी तक यह तय नहीं कर पाए कि कौन सी भाषा में शिक्षा पढ़ाई जानी चाहिये तथा कौन-सी शिक्षा पढ़ाई जाए, आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो रोजगार और नैतिक शिक्षा दे सके।

केन्द्रीय बौद्ध शिक्षण संस्थान के रिसर्च अधिकारी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज के समय में दो प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है। यह समय की मांग है- 1. आधुनिक शिक्षा, 2. पारम्परिक शिक्षा। जिस प्रकार पक्षी आकाश में दोनों पंखों से उड़ सकता है उसी प्रकार समाज में साथ-साथ चलने के लिये उक्त दोनों प्रकार की शिक्षा आवश्यक है।

डॉ. गोविन्द शर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि मुझसे पूर्व अनेक शिक्षा विद्वानों ने विचार रखे उनके साथ कुछ बात कहना चाहूंगा।

1. जो शिक्षा दे रहे हैं उसके माध्यम से देश समाज को क्या बताना चाहते हैं?
2. देश का स्वरूप, उसकी संस्कृति सभ्यता तथा उनके जीवन मूल्य क्या हैं?यदि शिक्षा यह नहीं बताती तो हर प्रकार की शिक्षा अधूरी है।
3. यदि हम जीवनमूल्यों का निवेश करना चाहते हैं तो हमें व्यक्ति के अन्दर इस प्रकार की भावना विकसित करनी चाहिये कि शिक्षा मनुष्य की भलाई के लिये है।

यदि हम राष्ट्र में गौरव लाना चाहते हैं तो प्राचीन गौरवशाली इतिहास को सामने लाना पड़ेगा। शिक्षा को संस्कृति, सभ्यता से जोड़ना पड़ेगा। शिक्षा विकास का माध्यम हो सकती है। अध्यापकों को पढ़ाते समय सोचना चाहिये कि हमारा छात्र हमसे क्या ग्रहण कर सकता है। हमारी संस्कृति सभ्यता में मूल चीज क्या है। भगवान बुद्ध ने कहा था कि सम्यक् जीवन जीयें इससे बड़ी शिक्षा कोई नहीं है। हमको ही शिक्षा का समाधान व चुनौतियों का सामना करना है। अंत में संस्कृति संस्थान के सदस्य टशीराम ने संगोष्ठी में भाग लेने वाले सभी विद्वानों का धन्यवाद किया। ❑

विहिप ने पाक से आए हिन्दुओं के साथ मनाया रक्षाबंधन

विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल व दुर्गा वाहिनी ने रक्षाबंधन का त्योहार पाकिस्तान से आए हिंदू बहिन-भाइयों के साथ धूमधाम से मनाया। दुर्गा वाहिनी ने जहाँ उन पाकिस्तानी भाइयों को राखी बाँधी जो अपनी बहनों को पाकिस्तान छोड़कर आने पर मजबूर हुए तो वहीं बजरंग दल ने उन बहनों से राखी बँधवाई जिनके भाई पाकिस्तान में रह गए। दोनों संगठनों ने पाक प्रताड़ित हिंदुओं को आश्वस्त किया कि दुनिया के किसी भी भाग में रहने वाले हिन्दू को हम प्रताड़ित नहीं होने देंगे। विहिप की क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री करुणा प्रकाश के नेतृत्व में बजरंग दल दिल्ली के संयोजक श्री शिव कुमार तथा दुर्गा वाहिनी की प्रांत संयोजिका श्रीमती संजना चौधरी के साथ कार्यकर्ताओं ने सभी पाकिस्तानी हिन्दुओं को तिलक लगाकर राखी बांधी तथा मिठाई खिलाई।

दुर्गा वाहिनी ने बाँधी तो बजरंग दल ने बंधवाई राखी

विहिप दिल्ली के मीडिया प्रमुख श्री विनोद बंसल ने बताया कि पाकिस्तान से आए अधिकांश लोग पहली बार रक्षा बंधन का त्योहार मनाकर भाव विभोर थे। पाकिस्तान से आए अधिकांश हिन्दू ऐसे थे जिनकी कलाई पर पहली बार राखी बंधी थी क्योंकि पाकिस्तान में राखी का मुस्लिम समुदाय मजाक उड़ाता था तथा वहां का बहुसंख्यक समुदाय बुरी दृष्टि से देखता था। सभी ने राखी बंधवा कर झूम-झूम कर नृत्य किया तथा मिठाइयां बांटी।❑

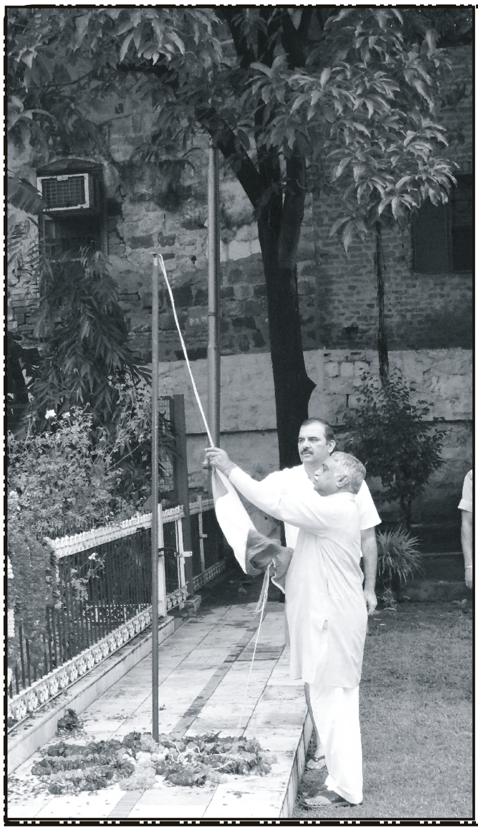

सरसंघचालक ने फहराया तिरंगा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डा. मोहन राव भागवत जी ने स्वतंत्रता दिवस की 67वीं वर्षगांठ के अवसर पर आरएल इंस्टीच्युट ऑफ न्यूटिकल साइंस, मदुरै (तमिलनाडु) में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया।

उधर संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहन वैद्य ने संघ कार्यालय, केशव कुंज, झंडेवाला नई दिल्ली में तिरंगा फहराया।

इस अवसर पर केशव कुंज में तैनात सी.आर.पी.एफ. की टुकड़ी और उपस्थित स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी और राष्ट्रगान जन-गण-मन का गायन किया।

संघ के सह सरकार्यवाह डा. कृष्णगोपाल जी, क्षेत्रीय प्रचारक श्री रामेश्वर जी, दिल्ली प्रान्त संघचालक श्री कुलभूषण आहूजा जी तथा सह प्रान्त संघचालक श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल जी सहित सैंकड़ों स्वयंसेवक इस अवसर पर उपस्थित थे।

लघु उद्योग भारती ने केन्द्रीय वित्त आयोग से मांगी राहत

प्रदेश में चल रहे सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों ने एकजुट होकर केंद्रीय वित्त आयोग से अपने लिए राहत मांगी है ताकि लघु उद्योग तालाबंदी की नौबत से बच सके। हिमाचल प्रदेश के दौरे पर आई वित्त आयोग की टीम ने प्रदेश के औद्योगिक संगठनों से बैठक कर उनकी समस्याएं जानी व मांगों पर विचार-विमर्श किया। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की पैरवी करने के लिए इंडस्ट्रीज एसोसिएशन लघु उद्योग भारती का एक दल प्रदेशाध्यक्ष तेजेंद्र गोयल व प्रांतीय महासचिव एन.पी. कौशिक के नेतृत्व में 14वें वित्त आयोग के अध्यक्ष वाई. वी. रेड्डी व उनकी टीम से शिमला में मिला। औद्योगिक संगठन लघु उद्योग भारती के पदाधिकारियों ने वित्त आयोग को बताया कि प्रदेश में 20 हजार से ज्यादा लघु उद्योग कार्यरत हैं जिनकी आर्थिक स्थिति सरकारी तथा बैंकों की नीतियों से खस्ता होती जा रही है। एसएसआई सैक्टर के उद्योग कैपिटल सब्सिडी का लाभ नहीं ले पाते और न ही ट्रांसपोर्ट सब्सिडी का लाभ उनको मिलता है। मशीनें कम होने से उन्हें सब्सिडी नहीं मिलती तो अन्य रियायतें कागजी औपचारिकताएं पूरी न होने से वंचित रह जाते हैं। उन्होंने मांग की कि इन सब प्रकार की रियायतों की बजाय हमारे बैंक लोन के ब्याज पर पांच साल तक पचास फीसदी कमी की जानी चाहिए ताकि डूबते उद्योगों को भी कुछ राहत मिले। सुरेंद्र जैन ने कहा कि कौलैक्टरल सिक्योरिटी के बिना लोन की सीमा को एक करोड़ से बढ़ाकर दो करोड़ किया जाना चाहिए वहीं लोन पर लगने वाले कागजी खर्च को भी समाप्त किया जाए। 14वें वित्त आयोग के अध्यक्ष वाई.वी. रेड्डी व उनकी टीम ने लघु उद्योग भारती की बातों को ध्यान से सुना व उनपर सहानुभूतिपूर्वक गौर करने का आश्वासन दिया। प्रतिनिधिमंडल में प्रदेशाध्यक्ष तेजेंद्र गोयल, प्रदेश महासचिव एनपी कौशिक, सिरमौर इकाई के अध्यक्ष विपुल घई व प्रदेश सचिव व गत्ता उद्योग संघ के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र जैन शामिल थे। ❑

84 कोसी धार्मिक यात्रा को अनुमति न देना दुर्भाग्यपूर्ण

विश्व हिन्दू परिषद ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा श्रीअयोध्या जी 84 कोसी धार्मिक यात्रा को अनुमति न दिए जाने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है। विश्व हिन्दू परिषद् के प्रदेश संगठन मंत्री, मनोज कुमार ने शिमला से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से कहा कि 84 कोसी परिक्रमा का यह कार्यक्रम पूरी तरह से संतों के द्वारा संचालित धार्मिक व परम्परागत है। इस परिक्रमा अनुष्ठान को वर्ष भर में कभी भी किया जा सकता है। किसी विशेष समय में लोग इसको अधिक मात्रा में करते हैं जैसे-ब्रज क्षेत्र में गोवर्धन, चित्रकूट में कामदगिरि व दक्षिण भारत में तिरूवन्मलई की परिक्रमा यात्रा है। सरकार के इसी भ्रम को दूर करने के लिए 17 अगस्त 2013 को संत उच्चाधिकार समिति के पूज्य संत श्री मुलायम सिंह व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से मिले थे और उन्हें विस्तार से पूरी जानकारी दी थी। उन्होंने अपनी भेंट में जो सौहार्द्र प्रकट किया था यह उसके विपरीत है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि मुस्लिम नेताओं के दबाव व मुस्लिम वोटों के लालच में सरकार सही निर्णय नहीं ले पा रही है और वह लगातार हिन्दू समाज को अपमानित करने का प्रयत्न कर रही है। सरकार के इस निर्णय से यह भी सिद्ध होता है कि उत्तर प्रदेश सरकार प्रदेश में कानून व्यवस्था संभालने में पूरी तरह से अक्षम है और इस सरकार में हिन्दू को अपनी धार्मिक परम्पराओं के निर्वहन करने का अधिकार प्राप्त नहीं है। उत्तर प्रदेश सरकार का यह निर्णय पूरी तरह से राजनैतिक है और अपने निहित राजनीतिक लाभ-हानि को देखकर लिया गया है। परिक्रमा का यह कार्यक्रम यथावत है। सम्पूर्ण देश से पूज्य संत अपने नियत समय पर यात्रा के लिए पहुंचेंगे। हिमाचल से सैकड़ों कि संख्या में संत तय कार्यक्रम में अयोध्या जाएंगे। ❑

छात्र संघ चुनाव सम्पन्न, एबीवीपी नम्बर वन

हिमाचल प्रदेश छात्र संघ चुनाव 17 अगस्त को सम्पन्न हुए। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद लगातार 14वीं बार प्रदेश का नंबर वन छात्र संगठन बना। परिषद के प्रांत संगठन मंत्री नवीन शर्मा ने कहा कि छात्र संघ चुनाव में एबीवीपी का मुकाबला एनएसयूआई और एसएफआई से नहीं बल्कि प्रदेश सरकार और उसके मंत्री व विधायकों के साथ था। शर्मा ने आरोप लगाया कि चुनाव में सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया गया है। नामांकन से लेकर चुनावी नतीजे आने तक हस्तक्षेप जारी रहा। प्रदेश विश्वविद्यालय में उपाध्यक्ष के पद पर पांच मतों का अंतर रहा। उन्होंने विश्वविद्यालय प्रशासन पर आरोप लगाया कि उन्होंने अवैध मतों की गणना कर ली थी। उन्होंने कहा कि अभी तक काउंटिंग एजेंट ने हस्ताक्षर नहीं किये हैं। मामले को प्रशासन के समक्ष उठाएंगे। यदि साकारात्मक नतीजे नहीं आए तो उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया जाएगा। एबीवीपी ने प्रदेश भर में 167 सीटें जीती हैं इनमें अध्यक्ष के 39, उपाध्यक्ष 43, महासचिव 41, व सह सचिव की 44 सीटें हैं। एनएसयूआई 146 सीटों पर जीती है। एसएफआई 57 पर अध्यक्ष 15, उपाध्यक्ष 13, महासचिव 16 व सह सचिव 13 सीटें। सोलन व धर्मशाला में परिषद के विजयी पैनल के प्रत्याशियों पर हमला हुआ जिसमें कई कार्यकर्ताओं को गम्भीर चोटें आई। ❑

कर्मचारी-आयकरदाता खाद्य सुरक्षा से बाहर

हिमाचल प्रदेश में सरकारी नौकर, पेंशनधारक और करदाताओं को खाद्य सुरक्षा विधेयक में शामिल नहीं किया जाएगा।

सरकार ने इन लोगों को विधेयक से बाहर रखा है। इन वर्गों के लोगों को सरकार सस्ते अनाज का लाभ नहीं देगी। इनके अलावा अन्य वर्गों को योजना में शामिल किया जाएगा। योजना को लागू करने के लिये समाज को दो वर्गों में बांटा जाएगा। एक अंत्योदय वर्ग तथा दूसरा प्रायोरिटी हाउस होल्ड। सूचना मिली है कि योजना के लागू होने के बाद शायद एपीएल की श्रेणी हट जाएगी। इसकी जगह प्रायोरिटी हाउस होल्ड श्रेणी लागू हो जाएगी, जिसमें एपीएल के वे सभी लोग शामिल होंगे जो न तो सरकारी नौकरी में हैं, न पेंशनधारक और न ही टैक्स के दायरे में आते हैं। इसके बाद जो लोग छूट जाएंगे, उन्हें खाद्य सुरक्षा विधेयक में शामिल किया जाएगा।

गौरतलब है कि प्रदेश में 36 लाख लोगों को इस विधेयक में शामिल किया जाना है, जिन्हें दो और तीन रुपये की दर से अनाज दिया जाएगा। ❑

लापता नौसैनिकों में हमीरपुर के अतुल शर्मा भी

मुम्बई में सिंधुरक्षक पनडुब्बी में हुए हादसे के बाद लापता नौसैनिकों में एक हमीरपुर के गांव ब्ल्यूट के सेलर अतुल शर्मा भी थे। यह हादसा 14 अगस्त को हुआ था जिसमें 18 नौसैनिकों के मारे जाने की आशंका है। 22 वर्षीय अतुल शर्मा ने प्रमोशान के बाद पैतृक घर ब्ल्यूट आने का वादा किया था। उनके पिता हेमराज अमृतसर में हिन्दू महासभा संस्थान में शास्त्री है। कई सालों से उनका पूरा परिवार वहां रहता है। 10 अगस्त को ही अतुल शर्मा का प्रमोशन हुआ था। पटना में ढाई साल की ट्रेनिंग के बाद छह माह पहले ही उन्हें तैनाती मिली थी। प्रमोशन मिलने पर उनका घर आने का कार्यक्रम था, लेकिन उन्होंने बताया था कि वे 25 दिन के टूअर के बाद ही घर लौटेंगे। ❑

स्वामी विवेकानन्द सार्द्ध शती की शुभकामनाओं सहित

बवासीर, भगन्दर, फिशरज़
एनलपोलिप्स, पाईलोनाइडल साइनस
आदि गुदा रोगों के क्षार-सूत्र (आयुर्वेद)
पद्धति से बिना चीर-फाड़ के ऑप्रेशन

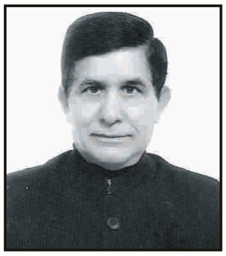

Dr. Hem Raj Sharma
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

SPECIALIST IN ANO-RECTAL DISORDERS

Facilities : Emergency 24 Hours, Indoor Facility, Well Equipted Operation Theatre, Computerized Clinical Laboratory, ECG, Pregnancy & Gynaecological Check-up, Immunisation for children

जगत अस्पताल एवं क्षार-सूत्र सैंटर
गवर्नमैंट कॉलेज के नजदीक, नंगल रोड, ऊना-174303 (हि.प्र.)
Phone : 94184-88660, 94592-88323

माँ वैष्णो देवी के सिक्के का विरोध

रिजर्व बैंक ने पिछले दिनों मां वैष्णो देवी का पांच रुपये का सिक्का जारी किया तो कट्टरवादियों के पेट में मरोड़ होने लगे। देश के अनेक नगरों से सिक्के का घोर विरोध करने के समाचार मिल रहे हैं। उनका कहना है कि एक देवी वाले सिक्के को ये स्वीकार नहीं कर सकते। इस देश की पंथनिरपेक्षता को जबरदस्त खतरा है। जहां भी मुस्लिम एकत्रीकरण होता है वहां यह अपील की जाती है कि वैष्णव देवी वाले सिक्के को स्वीकार नहीं किया जाए।

देश के कायदे-कानून के अनुसार रिजर्व बैंक द्वारा जारी किये गए इस सिक्के को स्वीकार नहीं करना एक बड़ा अपराध है। लेकिन मुस्लिम कट्टरवादी इस मुहिम के द्वारा सरकार को मजबूर करने का प्रयास कर रहे हैं। चुनाव सिर पर हैं इसलिये सरकार इस मांग के सम्मुख झुक जाए तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। मुम्बई के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में व्यापार अथवा लेन-देन करने वाले इस सिक्के को लेने से इन्कार कर देते हैं। उनका कहना है कि हम किसी देवी-देवता के चित्र वाले सिक्के को स्वीकार नहीं कर सकते। यह हमारी आस्था के विरुद्ध है, यह सिक्का श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर भारतीय रिजर्व बैंक ने जारी किया है। देवी के इस चित्र वाले सिक्के का मूवमेंट ऑफ वेलफेयर के अध्यक्ष अजीमुद्दीन तथा जमाएतुल उलेमा ने विरोध शुरू किया है। मुम्बई के एक दैनिक ने यह भी समाचार प्रकाशित किया है कि मुम्बई के मुस्लिम बहुल क्षेत्र में इसका बहिष्कार किया जा रहा है। मुस्लिम दुकानदार इसे स्वीकार नहीं करते हैं। जब कोई ग्राहक विवाद करने लगता है तो वे सीधा कह देते हैं कि आप हम से अपनी चाही हुई चीज न खरीदें। रिजर्व बैंक ने पहली बार तो इस प्रकार के चित्र वाले सिक्के जारी नहीं किये हैं। इसके पहले भी अनेक सिक्के जिन पर देवी-देवता के साथ संत और महापुरुषों के चित्र थे, उनकी याद में सिक्के जारी किये गए हैं।

माता सीता जी अशोक वाटिका में बैठी हैं, यह चित्र सऊदी अरब ने छापा था। एक इस्लामिक देश इंडोनेशिया में भगवान श्रीराम के सिक्के जारी हो सकते हैं, रामायण वहां का ग्रंथ हो सकता है, वहां की एयरलाइन का नामकरण भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ के नाम पर हो सकता है तो हिन्दू राष्ट्र भारत में माता वैष्णो के नाम से सिक्के बनने पर आपत्ति क्यों?

जब मदर टेरेसा के चित्र वाला सिक्का जारी किया गया था तो ऐसा तर्क कभी नहीं दिया गया। संत अलफोंसा के चित्र वाले सिक्के भी जारी किये गए और बाजार में चले। तब मुसलमानों ने कोई आपत्ति नहीं की।

माता सीता जी अशोक वाटिका में बैठी हैं, यह चित्र सऊदी अरब ने छापा था। एक इस्लामिक देश इंडोनेशिया में भगवान श्रीराम के सिक्के जारी हो सकते हैं, रामायण वहां का ग्रंथ हो सकता है, वहां की एयरलाइन का नामकरण भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ के नाम पर हो सकता है तो हिन्दू राष्ट्र भारत में माता वैष्णो के नाम से सिक्के बनने पर आपत्ति क्यों?

एक प्रेरणादायी घटना : दूसरे महायुद्ध के समय भारतीय सेना की एक टुकड़ी जिनमें सभी मत-पंथ और जाति के लोग थे, अंग्रेजों के पक्ष में लड़ने के लिये गई थी। युद्ध के मोर्चे पर जाते समय उन सिपाहियों से पूछा गया था कि आपको आपके कुटुम्ब अथवा देश के लिये कोई अंतिम इच्छा हो तो बताइये, उसे हम पूरा करने का प्रयास करेंगे। लीबिया जाने वाली टुकड़ी ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में यह बताया कि हमारे इस दल में भारत के सभी जाति, धर्म और समाज के लोग शामिल हैं। मरणोपरांत हम सभी को एक सामूहिक कब्र में दफनाया जाए। इतना ही नहीं उस कब्र पर स्वस्तिक का एक बड़ा निशान खोदा जाए। इससे दुनिया पहचान जाएगी कि यहां सभी हिन्दुस्तानी दफन हैं। इन सैनिकों की वसीयत से यदि कट्टरवादी कुछ सीखें तो अवश्य ही उनके ज्ञान चक्षु खुल जाएंगे। ❑

वंदेमातरम् का बहिष्कार

उत्तर प्रदेश में संभल लोकसभा सीट से बसपा सांसद डॉ. शफीकुर्रहमान बर्क ने कहा है कि वह मॉनसून सत्र में भी संसद में अनुपस्थित रहकर वंदेमातरम् का बहिष्कार करेंगे। ❑

मध्य प्रदेश में जबरन धर्मान्तरण पर लगेगी रोक

मध्य प्रदेश के बच्चों, वनवासियों तथा दलितों के धर्म परिवर्तन को लेकर राज्य सरकार बड़ा प्रावधान बनाने जा रही है। वर्तमान कानूनी व्यवस्था के माध्यम से न्यायालय द्वारा धर्म परिवर्तन कराने वाले दोषी व्यक्ति से 5 हजार और 10 हजार तक का ही जुर्माना लिया जाता है। साथ ही दोषियों को 3 महीने और छह महीने की सजा दिये जाने का प्रावधान था, जिसे बढ़ाकर राज्य सरकार एक और दो साल की सजा का प्रावधाान करने जा रही है और जुर्माने की राशि 50 हजार और एक लाख करने जा रही है। इससे जबरन धर्मान्तरण पर रोक लगाई जा सकेगी।

हल्के कानूनी प्रावधान के कारण जबरन धर्मान्तरण पर अंकुश नहीं लग पा रहा था। कई मामलों में वनवासियों का धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनाए जाने की शिकायतें भी सरकार तक पहुंची हैं।

मध्य प्रदेश के झाबुआ, अलीराजपुर, मंडला, छिंदवाड़ा, शहडोल, उमरिया आदि जिलों में धर्म परिवर्तन की कई घटनाएं हुई हैं, परन्तु कानून में सजा का प्रावधान कम होने की वजह से धर्म परिवर्तन कराने वाले लोग बच जाते थे, अथवा तीन और छह महीने की सजा पाकर जेल से छूट जाया करते थे। इस हल्के कानूनी प्रावधान के कारण जबरन धर्मान्तरण पर अंकुश नहीं लग पा रहा था। कई मामलों में वनवासियों का धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनाए जाने की शिकायतें भी सरकार तक पहुंची हैं। यहां तक कि इसके प्रयासों के चलते कुछ लोगों की हत्याएं भी हो चुकी हैं। ❑

जम्मू में गूंजा वन्दे मातरम्

एक तरफ जहां इस देश में शफिकुर रहमान बर्क जैसे सांसद वन्दे मातरम् का अपमान कर भरी संसद से उठ कर चले जाते हैं, वहीं देश के कोने-कोने से आए मुस्लिम भाई-बहनें जम्मू-कश्मीर में वन्दे मातरम् का शंखनाद कर मादरे-वतन हिन्दुस्तान की बन्दगी कर रहे हैं। जिन 200 से ज्यादा मुसलमान भाई-बहनों ने यह इतिहास लिखा वे सभी मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के देशभक्त कार्यकर्ता थे। आजादी के 67 साल बाद पहली बार जम्मू शहर में मुस्लिमों के द्वारा वंदे मातरम् भारत माता की जय और धारा 370 हटाओ के नारे लगे। इस वर्ष मई मास में राष्ट्रीय मुस्लिम मंच ने जम्मू में दो दिन का राष्ट्रीय सेमिनार 'हम हिन्दुस्तानी-जम्मू कश्मीर हिन्दुस्तान का' इस विषय पर आयोजित किया था, यह बेहद सफल रहा। ❑

पैट्रोलिंग से रोका भारत

लद्दाख में चीन ने एक बार फिर भारत को दादागिरी दिखाई है। चीन ने इस बार लद्दाख में लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (एलएसी) के पास अपनी दो चौकियों की पैट्रोलिंग के लिये निकले भारतीय सैनिकों को आधे रास्ते से लौटा दिया।

भारतीय सेना ने उत्तरी लद्दाख में 14 किलोमीटर दूर एलओसी के पास स्थित अपनी पोस्टों की निगरानी के लिये तिरंगा नाम से पैट्रोलिंग मुहिम शुरू की थी। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक वाहनों में सवार होकर आए चीनी सैनिकों ने भारतीय सैनिकों को उस इलाके की पैट्रोलिंग करने से रोक दिया। यही नहीं भारतीय सैनिकों को बैनर दिखाकर बताया गया कि यह हिस्सा चीन का है और कहा गया कि वे इस इलाके में आगे नहीं जा सकते। सूत्रों के मुताबिक भारतीय सैनिकों को रोकते हुए चीनी सैनिकों का व्यवहार बेहद आक्रामक था। ❑

'बीज कोष्ठ' में संरक्षित होंगे केरल के चिकित्सकीय पौधे

भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद में इस्तेमाल किये जाने वाले कई चिकित्सीय पौधों के विलुप्तीकरण के कगार पर पहुंच जाने को देखते हुए केरल इन पौधों के बीजों को दक्षिण कोरिया के बीज कोष्ठ (बीजों के संरक्षण का बैंक) में भेजने का विचार कर रहा है। यह कोष्ठ सुनामी या भूकम्प का सामना करने में भी सक्षम है।

कोरिया राष्ट्रीय वनस्पति वाटिका के वनस्पति विज्ञानियों का एक दल हाल ही में इस मसले पर चर्चा करने के लिए और सरकार के साथ संधि करने के लिए राज्य में था लेकिन इस प्रस्ताव पर अंतिम निर्णय राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण की सहमति के बाद ही लिया जा सकेगा। ❑

घूमती कलम

संत रविदास जयंती पर अवकाश नहीं

मोइनुद्दीन चिश्ती के उर्स पर सार्वजनिक अवकाश

❑ अजय मित्तल

उत्तर प्रदेश की सरकार ने संत रविदास के अवकाश को सार्वजनिक से निर्बाधित अवकाश की सूची में डाल दिया। उसने आदि जगद्गुरु शंकराचार्य की जयंती पर अवकाश नहीं दिया। पर अचानक मोइनुद्दीन चिश्ती के उर्स पर सार्वजनिक अवकाश घोषित कर दिया। इसे सिवाए मुस्लिम तुष्टीकरण के अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता। पाकिस्तान में भारत से ज्यादा चिश्ती के मुरीद हैं। पर वहां उनके उर्स पर अवकाश नहीं होता। अन्य किसी मुस्लिम देश में भी नहीं होता। यहां तक कि मोइनुद्दीन के मूल देश अफगानिस्तान (चिश्त नामक कस्बा उत्तरी पश्चिमी अफगानिस्तान में हेरात के पास है) में अवकाश नहीं होता। अजमेर दरगाह जिस प्रान्त में है उस राजस्थान में अवकाश नहीं होता। फिर यूपी में ही क्यों?

वैसे चिश्ती सिलसिले में इस सूफी संत की मजार पर चादर चढ़ाने वाले लोगों और जनसामान्य में उनके बारे में जानकारी का भारी अभाव है। मोइनुद्दीन चिश्ती मोहम्मद गौरी के भारत पर हमलों के दौरान यहां आए थे। उनके साथ शाह मदार नामक एक अन्य सूफी भी थे। कई इतिहासकार ऐसा मानते हैं कि ये दोनों मोहम्मद गौरी के जासूस थे। चिश्ती ने तो अपना अड्डा अजमेर में बनाया, जबकि मदार ने कानपुर के मकनपुर में। दोनों ने यहां रहकर गौरी को गुप्त सूचनाएं भेजी तथा हिन्दुओं के धर्मान्तरण का कार्य भी किया।

गुरुनानक देव जब अरब की यात्रा करते हुए मदीना पहुंचे तो वहां के चार प्रमुख इमामों से उनकी बातचीत हुई। उन इमामों ने कहा कि जो सूफी, पीर, फकीर हिन्दुस्तान गए हैं वे वहां के लोगों को सच्ची राह दिखाने का काम करते हैं। इस पर गुरुनानक ने दो प्रमुख सूफियों मोइनुद्दीन चिश्ती और शाह मदार की पोल खोलते हुए कहा था–

'तब धर के हिन्दू भेस चले मोइनुद्दीन मदार,
फिर आए हिन्दुस्तान विच, लागे करन विचार।
इक रहिया अजमेर विच, इक रहा मकानपुर जाई करके
नाक-चेटका हिन्दू लए मिलाई।
रहे हिन्दुस्तान विच, फकीर अल्लाह दे दोई, जोरी हिन्दन
जितीया, कर जोरा रहे खलोई।'

(हिन्दू वेशभूषा धारण कर मोइनुद्दीन और शाह मदार भारत आए और विचार करके एक अजमेर में और एक मकनपुर रहने लगा। उन्होंने नाटक-चेटक कर भोले-भाले हिन्दुओं को मुसलमान बनाया। ऐसे नाटकबाज फकीर खुद को अल्लाह का बंदा बताकर हिन्दुस्तान में रहते रहे। इन्होंने नाटकबाजी से ही हिन्दू जीते, विद्वता से नहीं।) ❑

केदारनाथ की परम्परागत पूजा-अर्चना नेपाल में

भारतीय संतों के आग्रह पर नेपाल स्थित एक हिन्दू तीर्थस्थल ने उत्तराखंड स्थित केदारनाथ मंदिर में होने वाली पूजा परम्परा का निर्वाह शुरू कर दिया है। एक अधिकारी ने यहां इस आशय की जानकारी दी। नेपाल के प्रधानमंत्री कार्यालय में सचिव कृष्ण हरि बस्कोटा ने केदारनाथ शीर डोलेश्वर महादेव में पूजा बहाल होने की घोषणा की। डोलेश्वर महादेव मंदिर करीब 1000 वर्ष पहले बनवाया गया था और इसका सम्बंध महाभारत से माना जाता है। राजधानी काठमांडू से 15 किलोमीटर दूर भक्तपुर स्थित मंदिर की प्रबंध समिति के सदस्य भरत जंगम ने कहा, 'केदारनाथ के मुख्य पुजारी ने हाल ही में आई बाढ़ के बाद केदारनाथ में रुकी पूजा-अर्चना को कुछ रिवाजों के साथ बहाल करने का अनुरोध किया था।'

चूंकि केदारनाथ मंदिर के दुरुस्त होने में तीन वर्ष का समय लगेगा इसलिये केदारनाथ मंदिर के प्रमुख चाहते हैं कि जब तक भारतीय तीर्थस्थल में परम्परा बहाल नहीं हो जाती तब तक वहां होने वाली पूजा केदारनाथ शीर डोलेश्वर महादेव में जारी रहे। जुलाई मास में एक विशेष समारोह के बीच शुरू हुई प्रथम पूजा नेपाल सरकार द्वारा समर्थित थी। ❑

'कश्मीर हिन्दुस्तान का' के लिये 43 हजार मुस्लिमों के हस्ताक्षर

'हम हिन्दुस्तानी, जम्मू-कश्मीर हिन्दुस्तान का' नामक संदेश फार्म पर राज्य के 43305 मुस्लिमों ने हस्ताक्षर किये हैं। वहीं, अन्य क्षेत्रों में भी अभियान चलाकर अब तक सवा आठ लाख हस्ताक्षर कराए गए हैं, जो राष्ट्रपति को सौंपे जाएंगे।

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच द्वारा आयोजित दो दिवसीय अधिवेशन के अंतिम दिन मंच के मार्गदर्शक एवं संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इन्द्रेश कुमार ने यह दावा किया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर में हस्ताक्षर अभियान में मुस्लिम लोगों की बड़ी भागीदारी की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह देश राष्ट्र से मुहब्बत करने वालों का है। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच इन देशभक्तों को जोड़ने का काम कर रहा है।

जम्मू-कश्मीर भारत का अटूट हिस्सा है और रहेगा। इस पर बुरी नजर रखने वालों को सहन नहीं किया जा सकता। इन्द्रेश कुमार ने केन्द्र सरकार की कड़ी निन्दा की जो कि पाकिस्तान व चीन के कब्जे वाले क्षेत्र को वापिस ले नहीं सकी है। 22 फरवरी 1994 को पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को वापिस लेने के प्रस्ताव पर सांसदों ने संसद में हस्ताक्षर किये, उनमें जम्मू कश्मीर के मुस्लिम सांसद भी शामिल थे।

उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर भारत का अटूट हिस्सा है और रहेगा। इस पर बुरी नजर रखने वालों को सहन नहीं किया जा सकता। इन्द्रेश कुमार ने केन्द्र सरकार की कड़ी निन्दा की जो कि पाकिस्तान व चीन के कब्जे वाले क्षेत्र को वापिस ले नहीं सकी है। 22 फरवरी 1994 को पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को वापिस लेने के प्रस्ताव पर सांसदों ने संसद में हस्ताक्षर किये, उनमें जम्मू कश्मीर के मुस्लिम सांसद भी शामिल थे। अब वे सांसद क्यों नहीं बात करते। जम्मू-कश्मीर में अब दोहरी नागरिकता नहीं चलेगी।

इससे पहले मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के संयोजक मो. अफजाल ने केन्द्रीय वार्ताकारों की निन्दा की। उन्होंने कहा कि वास्तविक नियंत्रण रेखा को कभी स्थायी सीमा नहीं माना जा सकता। हमें पाकिस्तान व चीन के कब्जे से एक-एक इंच भूमि वापिस चाहिये। धारा 370 राज्य के विकास में आड़े आ रही है। मौके पर छत्तीसगढ़ के मंत्री सलीम अश्रफी, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के प्रदेश संयोजक नीरज मीर भी उपस्थित थे।

इससे पूर्व देश के अलग-अलग हिस्सों से आए मुस्लिम समुदाय के लोगों ने अग्रवाल सभा में एकता व सद्भाव के लिये रैली भी निकाली, जो जम्मू क्लब पहुंच कर सम्पन्न हुई। ❑

इंग्लैंड में लगा अब 'स्कर्ट पर प्रतिबंध'

स्कूलों-कालेजों में पढ़ने वाली युवा छात्राओं के अंग प्रदर्शक परिधान जहां छात्रों व अन्य युवकों को वासनात्मक आक्रमणों के लिये उकसाते हैं वहीं छात्रों का पढ़ाई की ओर से भी ध्यान भंग करते हैं।

छात्राओं द्वारा मिनी स्कर्ट पहनना काफी समय से इंग्लैंड के स्कूल प्रबंधकों के लिये सिरदर्द बना हुआ है। इसी कारण वहां के अनेक स्कूलों के प्रबंधकों ने छात्राओं द्वारा अंग प्रदर्शक परिधान पहनने पर पाबंदियां लगाना शुरू कर दिया है।

इंग्लैंड में ग्लोसैस्टर शायर स्थित टूयक्सब्री स्कूल, स्कॉटलैंड में वारविकशायर हाई स्कूल, इंग्लिश टाऊन स्थित नार्थ गेट हाई स्कूल, ब्रिस्टल स्थित नेल्सी स्कूल आदि लगभग 63 स्कूल अपनी यूनीफार्म नीति के अंतर्गत लड़कियों के स्कर्ट पहनने पर पिछले कुछ समय के दौरान पाबंदी लगा चुके हैं।

इसी शृंखला में अब रैडिच के वाकवुड चर्च ऑफ इंग्लैंड मिडल स्कूल का नाम भी जुड़ गया है। वहां भी अपने यहां लड़कियों के स्कर्ट पहनने पर पाबंदी लगा दी गई है जो 9 साल से अधिक आयु की सभी लड़कियों पर लागू होगी। इसके अलावा स्कूल ने लड़कियों द्वारा ब्लाउज पहनने पर भी रोक लगाने का फैसला करते हुए आदेश दिया है कि 2014 से वे लड़कों जैसी पोशाक ही पहनेंगी। स्कूल का यह निर्णय इस दृष्टि से भी प्रशंसनीय है क्योंकि इंग्लैंड जैसे ठंडे देश में स्कर्ट के स्थान पर ट्राऊजर पहनना स्वास्थ्य के लिहाज से सुरक्षित है।

निःसंदेह इंग्लैंड के स्कूलों ने छात्राओं के परिधान सम्बंधी साहसिक निर्णय लेकर भारतीय शिक्षा संस्थानों के प्रबंधकों को एक दिशा दिखाई है। इस पर अमल करके विशेष रूप से शिक्षा संस्थानों में छात्राओं पर वासनात्मक आक्रमण पर किसी सीमा तक अंकुश लगाया जा सकता है। ❑ (साभार : पंजाब केसरी)

वास्तुकला में रोजगार की सम्भावनाएं

वास्तुकला का आरम्भ तो आदिकाल से ही हो चुका था। आदि मानव भी अपने रहने की जगह को रहने लायक बनाने का भरसक प्रयत्न करते थे और किसी आवास को रहने लायक बनाना ही वास्तुकला है। बाद में यह कला चाहे कितनी भी जटिल हो गई हो, इसका आरम्भ मौसम की उग्रता, वन्य पशुओं के भय और शत्रुओं के आक्रमण से बचने के लिये हुआ। मानव सभ्यता के इतिहास का भी ऐसा ही कुछ आरम्भ है। इसीलिये विद्वानों ने इसे मानव सभ्यता का योजक मसाला कहा। पहले इमारतें झोपड़ी और आश्रमों के रूप में होती थी। इन्हें हाथों या साधारण उपकरणों से बनाया जाता था। प्राचीन काल से ही भारत में वास्तु शास्त्र का गहन अध्ययन एवं शोध किया गया है। आज पाश्चात्य देशों में भी भारतीय वास्तु शास्त्र के नियमों के आधार पर भवन निर्माण किये जा रहे हैं। वैदिक काल में ही यज्ञवेदी आदि के निर्माण में वास्तुशास्त्र का उपयोग प्रारम्भ हो गया था। अनंतर सिंधु घाटी की सभ्यता इसका जीता जागता प्रमाण है। जब शहरों ने कांस्य युग में प्रवेश किया, तो ईंट बिछाने और बढ़ई जैसे पेशेवर कारीगरों के एक वर्ग का उदय हुआ। आठवीं शताब्दी के बाद और विशेषकर 10वीं और 12वीं शताब्दी के बीच का काल मंदिर निर्माण कला का चरमोत्कर्ष माना जाता है। आज हम जिन भव्य मंदिरों को देखते हैं, अधिकतर इसी काल में बनाए गए हैं।

शैक्षणिक योग्यता

कैरियर के इस फील्ड में जाने के लिये छात्रों को साइंस संकाय में फिजिक्स और मैथ्स पढ़ना अनिवार्य होता है। जो लोग फिजिक्स और मैथ्स में माहिर होते हैं, वे इस फील्ड में बेहतर काम कर सकते हैं। सबसे खास बात यह कि विद्यार्थियों की स्केच और डिजाइन तैयार करने में रूचि होनी चाहिये।

कोर्स कौन-कौन से

आर्किटेक्चरल डिजाइनिंग में–

1. बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर (बी.आर्क)
2. मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (एम.आर्क)

सिविल इंजीनियरिंग में–

1. बी.ई. या बी.टेक डिग्री

पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर छात्र चाहे तो एम.ई. या एम.टेक कर सकते हैं।

प्रमुख शिक्षण संस्थान

एपीजी शिमला यूनिवर्सिटी, शिमला
स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली
सेंटर फॉर एन्वायरमेंटल प्लानिंग एंड टेक्नोलॉजी, अहमदनगर
बंगाल इंजीनियरिंग एंड साईंस यूनिवर्सिटी, हावड़ा
सर जेजे कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर, मुम्बई
सुशांत स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर, गुड़गांव
कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, ऊधमपुर, जम्मू कश्मीर ❑

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob. 98059-33644

Dr. Akshey Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (GoldMedalist)
MS (MAMC Delhi), Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available : General & Specialist OPD, Indoor Admission facilities, Fully equipped operation Theatre, All Major & MinorOperations, Laproscopic gall bladder Remobal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

बेटियों के नाम के पौधे 1100 रुपये की एफडी

नगर परिषद सोलन की पहल कन्याओं के साथ पर्यावरण संरक्षण में मील का पत्थर साबित हो सकती है। नगर परिषद ने समाज को बेटियों के संरक्षण के साथ पर्यावरण की सुरक्षा का अनोखा उदाहरण पेश किया है। सोलन में 'कन्या छाया' नामक योजना की शुरुआत हुई। शहर में एक वर्ष में जन्मी 19 कन्याओं के नाम पर जवाहर पार्क में पौधरोपण किया गया। इसके बाद इन बच्चियों के नाम की 1100 रुपये की एफडी परिजनों को प्रदान की, जो 18 साल तक रहेगी। इस मौके पर मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित एवं प्रसिद्ध पर्यावरणविद् महेश चंद मेहता के अलावा नगर परिषद् के पदाधिकारियों के अलावा शहर के कई गणमान्य लोग मौजूद थे। शहर की जिन बच्चियों के नाम पर पौधे रोपे गए, उनमें मन्नत, शानवी, पिंकी, साही, प्रियांशी, शिरजा आदि शामिल हैं। 'कन्या-छाया' योजना के तहत आयोजित वन महोत्सव का शुभारम्भ करने के बाद नगर परिषद् सभागार में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि प्रसिद्ध पर्यावरणविद् महेश चंद मेहता ने कहा कि पृथ्वी पर जीवन व पर्यावरण को बचाने के लिये 'नीड बेस' पॉलिसी का बनना जरूरी है। हमने अपनी जरूरतें बढ़ाई हैं, जिससे पर्यावरण का ह्रास हो रहा है। उन्होंने उत्तराखंड में हुई भारी त्रासदी को पर्यावरण के साथ हो रही छेड़छाड़ का ही परिणाम बताया।

उन्होंने कहा कि हिमालय का विश्वभर को स्वच्छ पर्यावरण प्रदान करने में बड़ा योगदान है। इसलिए कार्बन न्यूट्रल राज्य के तौर पर हजारों करोड़ रुपये प्रदेश को मिल सकते हैं। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे अपने साथियों के जन्मदिन पर प्लास्टिक के खिलौनों की बजाए पौधे उपहार के तौर पर दें, जो जीवनभर की याद बन सकते हैं और स्वयं भी अपने जन्मदिन पर पौधा जरूर लगाएं। गांव-गांव में हरियाली पैदा करने के लिये युवा ब्रिगेड तैयार की जानी चाहिये। नगर परिषद अध्यक्ष राकेश पंत ने सोलन शहर को स्वच्छ बनाने में नगर परिषद की भूमिका के बारे में बताया। ❑

ताकि देवालयों में गूंजते रहें वैदिक मंत्र

ऐसे लोग बहुतेरे मिल जाएंगे जो समाज में घटित-अघटित घटनाओं को लेकर चिंतित होते रहते हैं, लेकिन उन लोगों की संख्या बहुत कम है जो आसन्न खतरों से निपटने के लिये वास्तव में कुछ प्रयास करते हों। यहां धर्मनगरी में पंडित बलराम गौतम उन्हीं चुनिंदा शख्सियत में शुमार हैं।

ब्रह्मसरोवर स्थित प्राचीन कात्यायनी देवी मंदिर के संचालक पंडित बलराम गौतम ने करीब डेढ़ हजार ऐसे विद्यार्थी तैयार किये हैं जो मंदिरों में वेदपाठ की परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। पंडित बलराम गौतम के पिता पंडित लक्ष्मी नारायण ब्रह्मसरोवर स्थित प्राचीन श्री कत्यायनी देवी मंदिर के पुजारी थे। 1990 में पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने मंदिर का कार्यभार सम्भाला। इससे पूर्व वह दिल्ली स्थित एक दवा फैक्टरी में कार्य करते थे। पिता के बाद मंदिर का कार्य सम्भाले पर उन्हें एक विकट समस्या से जूझना पड़ा। अच्छे वेदपाठी ढूंढे नहीं मिल रहे थे। आखिर उन्होंने वर्ष 1991 में पराशक्ति साधक संगठन के अंतर्गत परा शक्ति वेद पाठशाला मंदिर में ही शुरू की। उन गरीब ब्राह्मण बच्चों को वेद पाठशाला में लाया गया, जिनका परिवार उनकी पढाई का खर्च नहीं उठा सकता था और रोजी-रोटी के लिये संघर्ष कर रहे थे। इन बच्चों की शिक्षा मंदिर में होती तथा रहने की व्यवस्था उन्होंने अपने घर पर की। पंडित बलराम बताते हैं कि आज भी उत्तर प्रदेश, हिमाचल, पंजाब, उत्तराखंड के 25 बच्चे उनके घर पर वेदपाठ व ज्योतिष की शिक्षा ले रहे हैं। 20 वर्षों में 1500 से ज्यादा बच्चों को वेदपाठ व ज्योतिष की शिक्षा देकर जहां पौराणिक संस्कृति को जीवित रखने का कार्य किया गया वहीं इस विद्या के माध्यम से इन बच्चों को रोजगार का रास्ता भी दिखाया गया। पूर्व राष्ट्रपति आर. वेंकट रमन, पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी सहित देश की अन्य बड़ी हस्तियों का ब्रह्मसरोवर पर पूजा पाठ करा चुके पंडित बलराम कहते हैं कि उनका उद्देश्य पौराणिक संस्कृति को सहेजने के लिये जो बन सके करना है। ❑

मैं भारत हूं

अपनी विशाल सहृदयता व
संस्कृति, सभ्यता के लिये
विश्व में पहचाना जाता हूं
अनेक भाषाओं व बोलियों से
विचारों को व्यक्त कर पाता हूं।
हिमालय को सर पर सजाकर,
गंगाजल को अमृत बनाकर,
चारों दिशाओं का वंदन कर
हिन्द महासागर से स्तुति पाता हूं।
विदेशियों का भी स्वागत यहां।
यहां जैसा मौसम और कहां!
लोथल, धौलगिरी में,
मानवता को संरक्षण पहुंचाता हूं।
ना समझे दुनिया कि भारत रहता मौन है।
जानता हूं सब, मित्र व दुश्मन कौन है?
लटकाकर फंदों पर अजमल कसाब,
हिसाब चुकता करना भी जानता हूं मैं
मैं भारत हूं।

– **राम प्रसाद शर्मा**, कांगड़ा

शब्दजालों के बुनकर

भ्रष्टता का शासन पर मचा हाहाकार
आंकने का क्या है सही आधार
आम के बीच से बने खास जो
सभी हैं इसके तामीरदार

गला फाड़कर, भीड़ बुलाकर
झूठे शब्द जालों के हैं जो बुनकर
कुर्सी पाने की होड़ में
बरसते इक दूजे पर खुलकर

विकास के नाम पर भरमा कर
शराब व आश्वासनों से मत पाकर
भूल जाते आम जन को
आरामपरस्त राजगद्दी पाकर

संविधान पालन की शपथ लेकर
धर्म ग्रंथों में कसम खाकर
शासन में करे मनमानी
आम जन को भुलाकर

– **कपिल बालीवाले**,

मैं हिन्दू हूं

मैं सच्चा हिन्दू हूं
मानवता का केन्द्र बिन्दू हूं
गीता का उपदेश हूं,
पंचशील का सन्देश हूं।
सत्य अहिंसा में,
मैं बौद्ध, जैन हूं,
भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता,
को देखकर बेचैन हूं।
बाइबल हो या कुरान,
सर्वग्रंथ एक समान।
मानवीय मूल्यों का भंडार,
गुरु ग्रंथ साहिब का सार,
वसुधैव कुटुम्बकम् सारा संसार,
मैं पुरातन मैं सनातन,
मानवता मेरा धर्म है,
राष्ट्रीयता मेरा कर्म है।

– **आचार्य टोडर राम**, मंडी

संस्कृत भाषा की उपयोगिता

❑ ओंकारचन्द

आत्मा यथा शरीरेषु तथा भाषासु संस्कृतम्।
वर्तते लोक-भाषाणां तत्समवायिकरणम्।।

भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा धार्मिक जीवन को संस्कृत भाषा निरंतर अनुप्राणित करती आई है। मानव जीवन में विभिन्न संस्कारों को प्रतिष्ठापित करते हुए भारतीय आर्यों ने जिन मंत्रों का उद्घोष किया था, ऋग्वेद के उन्हीं मंत्रों से आज पूरे भारत में विभिन्न संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं। चाहे कश्मीर से कन्याकुमारी का विस्तार हो या फिर बंगाल की शस्याश्यामला उर्मिला से राजस्थान तक की शुष्क मरुस्थली सर्वत्र ही जातकर्म, उपनयन विवाह आदि अवशिष्ट संस्कारों को प्रतिपादित करते समय उन्हीं अभिन्न मंत्रों की पुण्य स्वर लहरी मानसतंत्री को अनायास झंकृत कर देती है।

स्पीच थैरेपी के ज्ञाताओं का मानना है कि संस्कृत पढ़ने से गणित और विज्ञान की शिक्षा आसान होती है। इसके पढ़ने से मन में एकाग्रता आती है। वर्णमाला भी वैज्ञानिक है इसके उच्चारण मात्र से गले का स्वर स्पष्ट होता है। कल्पना शक्ति को बढ़ावा मिलता है।

इन सभी तथ्यों को देखते हुए सभी भारतीयों की संस्कृत के प्रति श्रद्धा है। संस्कृत को देववाणी व अथाह ज्ञान का भण्डार कहते हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद संस्कृत के प्रति आकर्षण नहीं दिखाई देता। इसलिये संस्कृतज्ञों को आवश्यक है, संस्कृत की उपयोगिता का लोगों के सामने सम्यक् उपस्थापन। इस संदर्भ में कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियां संक्षेप में दी जा रही है।

भारतीय राष्ट्रभाषा हिन्दी में अधिकांश संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द हैं और व्याकरण के नियम जैसे स्वर, व्यंजन संधि समास लगभग यथावत् लिये गए हैं। इसलिये कोई भी व्यक्ति यदि हिन्दी भाषा के शब्दकोष व व्याकरण की दृष्टि से सुदृढ़ बनाना चाहता है तो संस्कृत उसके लिये उपयोगी है। इसके बिना हिन्दी भाषा का ज्ञान अधूरा है।

नासा की 'मिशन संस्कृत' वेबसाइट इस बात की पुष्टि करती है कि कम्प्यूटर के लिये संस्कृत भाषा सबसे उपयुक्त हैं। इस भाषा में सूत्र रूप में छोटे संदेश भेजने की क्षमता है। एक लेख के माध्यम जानकारी मिली है कि नासा के वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने 1985 में भारत से संस्कृत के एक हजार प्रकांड विद्वानों को बुलाया था उन्हें नासा में नौकरी का प्रस्ताव दिया था लेकिन विदेशी उपयोग में अपनी भाषा को मदद देने से उन विद्वानों ने इन्कार कर दिया था। इसके बाद कई अन्य वैज्ञानिक पहलू समझते हुए अमेरिका ने नर्सरी कक्षा से ही बच्चों को संस्कृत की शिक्षा शुरू कर दी है।

स्पीच थैरेपी के ज्ञाताओं का मानना है कि संस्कृत पढ़ने से गणित और विज्ञान की शिक्षा आसान होती है। इसके पढ़ने से मन में एकाग्रता आती है। वर्णमाला भी वैज्ञानिक है इसके उच्चारण मात्र से गले का स्वर स्पष्ट होता है। कल्पना शक्ति को बढ़ावा मिलता है। आईआईएमसी जैसे कई शीर्ष स्तर के बी-स्कूल ने अपने प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में संस्कृत कवि कालिदास के काव्य, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, भगवतगीता, स्वामी विवेकानन्द और श्री अरविंद का दर्शन व पंचतंत्र जैसे ग्रन्थों को पढ़ाना इसलिये उपयोगी समझा ताकि वहां से निकले प्रत्येक विद्यार्थी में नेतृत्व व व्यवसायिक गुणों की क्षमता हो।

आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के क्षेत्र में चरक की चरक संहिता, सुश्रुत की सुश्रुत संहिता व वाग्भट्ट का अष्टांग हृदयम् प्रसिद्ध है। इन ऋषियों ने हर प्रकार की चिकित्सा के लिये संस्कृत भाषा में सूत्रों की रचना करके गागर में सागर भर दिया है। इनका मानना है कि जिस व्यक्ति ने शरीर को जान लिया और भोजन को पहचान लिया वह व्यक्ति 85 प्रतिशत तक चिकित्सा स्वयं कर सकता है। गणित के क्षेत्रों में रामतीर्थ जी का वैदिक गणित प्रसिद्ध है। इसमें सूत्रों के माध्यम से मनुष्य केवल अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए जमा, गुणा व भाग जैसे कई बड़ी-बड़ी संख्याओं के सवालों को चुटकी में हल कर देते हैं।

महर्षि पतंजलि द्वारा लिखित योगदर्शन का आज पूरे विश्व में प्रचार हो रहा है। इसके अष्टांगों के सतत् अभ्यास से न केवल मनुष्य निरोगी बनता है अपितु आत्मा को परमात्मा से मिलाने में भी सक्षम हो सकता है। आजकल इसके तीन पहलुओं जैसे आसन प्राणायाम और ध्यान का महत्त्व समझते हुए विद्यालय स्तर के पाठ्यक्रम में इसे शामिल कर दिया गया है। वर्तमान काल में मानव के सम्मुख सबसे बड़ा संकट नैतिकता के लोप का है। संस्कृत भाषा ने सदैव ही आदर्शवाद, आध्यात्मिकता एवं उच्च नैतिकता का जो मानदंड उपस्थित किया है, वह आज की संकटापन्न स्थिति में भी परम उपयोगी है। ❑

थाईलैंड में भारत की अलख जगाता संस्कृत अध्ययन केन्द्र

❑ श्याम परांडे

अभी हाल ही में थाईलैंड के सिल्पाकोर्ण विश्वविद्यालय के अंतर्गत संस्कृत अध्ययन केन्द्र के विशाल परिसर में जाने का अवसर मिला। वहां जो अनुभव हुआ वह अनूठा ही है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि वह शायद दुनिया में संस्कृत को समर्पित सबसे बड़ा भवन होगा। यह आश्चर्य की ही बात है कि ऐसा केन्द्र भारत में नहीं, थाईलैंड में स्थित है। केन्द्र को थाईलैंड के राजा राम नवम् भूमिबल अतुल्यध्वज का आशीर्वाद प्राप्त है, जिनके चैपत्तना फाउंडेशन ने इसके लिये भूमि उपलब्ध कराई थी। केन्द्र को उतना ही सहयोग वहां की युवरानी महाचक्री सिरिन्धोर्ण से भी प्राप्त होता है, जिन्होंने संस्कृत पुरालेख विद्या में परास्नातक की उपाधि ली है। युवरानी ने सहर्ष इस केन्द्र की संरक्षक होना स्वीकारा है।

केन्द्र के संस्थापक निदेशक डॉ. चिरापत प्रापेंदविद्या और निदेशक ल्येउर्मसाई ने एक छोटी सी भेंट में थाईलैंड में संस्कृत अध्ययन को बढ़ावा देने की अपनी योजनाओं के बारे में बताया। केन्द्र की पांच मंजिला भव्य इमारत में संस्कृत अध्ययन के लिये तमाम आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होने जा रही है। माना जा रहा है कि आने वाले सत्र में विभिन्न कार्यक्रमों पुरातत्व विज्ञान संकाय सहित इस केन्द्र में करीब 200 छात्र दाखिला लेंगे। केन्द्र भारत सरकार को धन्यवाद देता है कि जिसने अपने पहले वायदे को साकार करने की शुरुआत 2003 में की थी जब डॉ. अमरजीवन लोचन ने केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक के नाते तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के सामने आर्थिक सहयोग देने की बात रखी थी। अटल जी ने इसकी सहर्ष अनुमति दी। बाद में युवरानी के कहने पर भारत सरकार ने बैंकाक स्थित दूतावास के माध्यम से 2 करोड़ रुपये का अनुदान जारी किया। बाकी के 15.60 करोड़ शाही थाई सरकार ने दिये। केन्द्र को अभी 4 करोड़ रुपये का इंतजार है जिससे वह कक्षाओं, 300 सीटों के सभागार वगैरह का काम पूरा कर सके। यह संस्कृत अध्ययन केन्द्र जून-जुलाई 2015 में 16वां विश्व संस्कृत सम्मेलन आयोजित करने जा रहा है। यह केन्द्र थाईलैंड में संस्कृत और पाली अध्ययन की बढ़ती लोकप्रियता का ही सूचक नहीं है, बल्कि यहां के संस्कृत विद्वानों के मन में संस्कृत की लौ जलाए रखने के प्रति समर्पण को भी दर्शाता है। ❑

INDIAN ACUPRESSURE & HEALTH CARE CENTRE
(हिमाचल का एकमात्र संस्थान)

Dr.Nidhi Bala
M.D. ACU Rattna
M. 98175-95421

Dr.Shiv Kumar
M.D. ACU Rattna
M. 98177-80222

सर्वाइकल, ब्लड प्रेशर, जोड़ों के दर्द, डिस्क प्रोबलम, माइग्रेन, गठिया, घुटनों का दर्द, यूरिक एसिड, अधरंग, त्वचा रोग आदि बीमारियों का ऐक्युप्रेशर और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है।

आगामी कैम्प

5 से 10 सितम्बर : सरस्वती विद्या मंदिर, कटराई, कुल्लू
11 से 16 सितम्बर : गुरुद्वारा, आखाड़ा बाजार, कुल्लू
23 से 28 सितम्बर : राम मंदिर, मणिकर्ण, कुल्लू

ट्रेनिंग, ट्रीटमेंट और कैम्प के लिये संपर्क करें :

Regular Clinic :
Mohalla Gurusar, Ward No. 2, Near Himachal Glass House, UNA (H.P.)

कृष्णमय संत
बाबा बालजी महाराज

आश्रम : श्री राधाकृष्ण मंदिर, कोटलाकलां ऊना (रलवे स्टेशन के पास)

5 सितम्बर को आश्रम पहुंचेंगे पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल

1 सितम्बर : एकादशी, 8 बजे, ज्योति प्रचंड बसदेहड़ा।

2 सितम्बर : आश्रम संत बाबा बाल जी महाराज लाल सिंगी, चताड़ा, कोटला, पावर हॉऊस, बंदलैहड़ी।

3 से 6 सितम्बर : श्री भक्तमाल कथा व रासलीला (सुबह 10 बजे से सायं 4 बजे तक)

कथा व्यास : श्री राजिन्द्र देव आचार्य जी महाराज।

7 से 13 सितम्बर : श्रीमद् भागवत कथा व रासलीला (सुबह 10 बजे से सायं 4 बजे तक) कथा व्यास : आचार्य पं. राम गोपाल जी, स्थान : श्री राधाकृष्ण मंदिर, आश्रम संतबाबा बाल जी महाराज, कोटला कलां, ऊना (हि.प्र.)

14 सितम्बर : श्री महिन्द्र सिंह गांव नारी, चिंतपूर्णी

16 सितम्बर : संक्रांति एवं एकादशी

उजड़ी फसलें तबाह किसान

वैश्वीकरण के इस दौर में कृषि क्षेत्र बदहाली की ओर जा रहा है। किसानों की भूमि का अधिग्रहण कर उद्योग, शिक्षण संस्थान, अपार्टमेंट, सीमेंट कारखाने इत्यादि स्थापित किये जा रहे हैं। इससे रोजगार के अवसर तो जरूर बढ़े हैं, लेकिन कृषि क्षेत्र पर संकट आ खड़ा हुआ है। जमीनों के अधिग्रहण से कृषि योग्य भूमि निरंतर कम हो रही है। हिमाचल के 55.67 लाख हेक्टेयर भौगोलिक क्षेत्र में से एक दशक पूर्व कृषि के अधीन 999676 हेक्टेयर क्षेत्र था, जो घटकर 968345 हेक्टेयर ही रह गया है। इसमें 211295 हेक्टेयर क्षेत्र विभिन्न उद्यान उपज के अधीन है। नकदी फसलों के उत्पादन में शिमला नम्बर वन है, जबकि खाद्यान्न फसलों के उत्पादन में कांगड़ा जिला अव्वल है। शिमला में नकदी फसलें 22772 हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जा रही है। इससे निश्चित तौर पर किसानों की आर्थिकी में सुधार आया है। इसी तरह कांगड़ा में 198.30 हजार हेक्टेयर क्षेत्र खाद्यान्न फसलों के अधीन है। कांगड़ा के बाद मंडी में 139.12 हजार हेक्टेयर भूमि पर विभिन्न खाद्यान्न फसलें उगाई जा रही हैं। नकदी फसलों के उत्पादन में भी मंडी जिला दूसरे स्थान पर है। यहां सालाना 16958 हेक्टेयर क्षेत्र में नकदी फसलें तैयार की जा रही हैं। हिमाचल में बीते एक दशक के दौरान कृषि क्षेत्र के अधीन भूमि में निरंतर कमी हो रही है, क्योंकि किसानों को पूरा मेहनताना नहीं मिल पा रहा है। किसानों की फसलें या तो जंगली जानवर तबाह कर रहे हैं या फिर कुदरत का कहर इन पर बरप रहा है। किसानों की 80 फीसदी से अधिक भूमि पूरी तरह बारिश के पानी पर निर्भर है। ऐसे में बारिश न होने से सूखा फसलों को तबाह कर जाता है। किसानों के पास खेती को छोड़ने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं है, वहीं नकदी फसलों की तरफ किसानों के बढ़ते रुझान से भी खाद्यान्न फसलों के उत्पादन में निरंतर गिरावट हो रही है। वर्ष 1997-98 में 853.88 हजार हेक्टेयर क्षेत्र खाद्यान्न फसलों के अधीन था, जो अब घटकर 796.50 हजार हेक्टेयर रह गया है।

जानकारों की मानें तो इसका मुख्य कारण जंगली जानवरों द्वारा फसलों पर कहर बरपाना है। खेती बचाओ संघर्ष समिति की मानें तो **जंगली जानवर सालाना 500 करोड़ (अनुमानित) रुपये से अधिक की नकदी फसलें तबाह कर रहे हैं। आलम यह है कि फसलों की रखवाली के लिये किसान रात में भी चैन की नींद नहीं सो पा रहे हैं। दिन में बंदरों व सूअर से तो रात के समय साही, खरगोश, नीलगाय इत्यादि से फसलें बचानी पड़ रही हैं। हिमाचल में इस समय 2310 से अधिक पंचायतें जंगली जानवरों की समस्या से जूझ रही हैं। इसी प्रकार राज्य के किसान सिंचाई की सुविधा न होने से भी खेतीबाड़ी छोड़ रहे हैं। हर वर्ष करोड़ों की फसल सूखे की भेंट चढ़ जाती है। बेमौसमी बरसात से भी फसल खराब हो रही है।** मनरेगा योजना शुरू होने के बाद उत्तर प्रदेश व बिहार से बहुत कम मजदूर हिमाचल आ रहे हैं। मनरेगा शुरू होने से पहले प्रदेश में यूपी व बिहार के बहुत से मजदूर आते थे, लेकिन वर्ष 2006 के बाद से राज्य में मजदूरों की कमी खलनी शुरू हो गई है। नेपाल से भी बहुत कम मजदूर हिमाचल आ रहे हैं। बहुत से किसान जानकारी के अभाव में खेतीबाड़ी छोड़ रहे हैं। कृषि विशेषज्ञ खेतों तक नहीं पहुंच पा रहे हैं। जो योजनाएं बन रही हैं, उनका राज्य के किसानों-बागवानों को लाभ नहीं मिल पा रहा है। बहुत सी योजनाएं कागजों को ही काला कर रही हैं। पीडीएस स्कीम के तहत लोगों को सबसिडी पर दिया जा रहा राशन भी खाद्यान्न फसलों के उत्पाद में गिरावट का कारण माना जा रहा है। किसानों की अवधारणा बन गई है कि जब डिपो में दो रुपये किलो गेहूं तथा तीन रुपये किलो चावल मिल रहा है तो इन्हें उगाए जाने की जरूरत क्या है? ❑ (साभार : दिव्य हिमाचल)

एक तो सरकार की बेरुखी, ऊपर से जंगली जानवरों का आतंक। ऐसे में कौन चाहेगा कि वह खेतों में पसीना बहाए। फसल बीज भी दी तो क्या उसका सही मेहनताना मिलेगा या फिर कुदरत के थपेड़े उस मेहनत को कुचल देंगे, शायद यही सवाल आज हिमाचल का किसान-बागवान खुद से कर रहा है। दिन-रात मेहनत कर खेतों में सोना पैदा करने वाले हाथ आज दाने-दाने को तरस रहे हैं....

प्रतिक्रिया

आर.टी.आई. से पार्टियों में खलबली क्यों?

❑ डॉ. अंजनी कुमार झा

आरटीआई के दायरे से विभिन्न राजनीतिक दल बाहर आने के लिये जुगलबंदी में जुटे हैं। वैसे हर पार्टी के अपने विचार, एजेंडे, घोषणा पत्र आदि हैं, किन्तु जनता के समक्ष असलियत न आए, इसके लिये स्वयं के लिये विशेषाधिकार का दर्जा पाकर सूचना के अधिकार के कानून के दायरे से बाहर होने की कारूणिक छटपटाहट है। ऐसे में ये दल फिर किस मुंह से सड़ रही सिस्टम को दुरुस्त करने की वकालत करते हैं। बड़ा ही विरोधाभास और दोहरापन है। इसी कारण सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में 'नेता' उपहास के पात्र हैं।

वर्तमान सम्प्रग सरकार तो स्वयं नहीं चाहती थी और जब रायशुमारी हुई तो सम्पूर्ण विपक्ष साथ हो चला, क्योंकि राज्यों में तो अलग-अलग पार्टियों की सरकार चल रही है। बेहिसाब चंदा, जमीन, भवन, वाहन आदि सुविधाओं की आरटीआई से जांच में पार्टियों की सच्चाई आ जाएगी तो मुखौटा भी उतर जाएगा, इसलिये भ्रमजाल जितना संकीर्ण होगा, गलतफहमी बनी रहेगी।

केन्द्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) ने तीन जून के अपने ऐतिहासिक आदेश में कहा था कि राजनीतिक दल लोक प्राधिकार है। आयोग ने कहा था कि छह राष्ट्रीय दल कांग्रेस, भाजपा, राकांपा, माकपा, भाकपा और बसपा को केन्द्र सरकार से लगातार अप्रत्यक्ष रूप से वित्त पोषण मिलता है। आरटीआई अधिनियम के तहत उनका स्वरूप सार्वजनिक प्राधिकार का है क्योंकि वे सार्वजनिक काम करते हैं। इसलिये उन्हें आरटीआई कानून के तहत सार्वजनिक संस्थाएं माना जाएगा।

केन्द्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) ने तीन जून के अपने ऐतिहासिक आदेश में कहा था कि राजनीतिक दल लोक प्राधिकार है। आयोग ने कहा था कि छह राष्ट्रीय दल कांग्रेस, भाजपा, राकांपा, माकपा, भाकपा और बसपा को केन्द्र सरकार से लगातार अप्रत्यक्ष रूप से वित्त पोषण मिलता है। आरटीआई अधिनियम के तहत उनका स्वरूप सार्वजनिक प्राधिकार का है क्योंकि वे सार्वजनिक काम करते हैं। इसलिये उन्हें आरटीआई कानून के तहत सार्वजनिक संस्थाएं माना जाएगा।

पूर्व सूचना आयुक्त शैलेंद्र गांधी के मत में आरटीआई कानून की धारा 2(एच) में उल्लेख है कि सभी पब्लिक अथॉरिटी इसके दायरे में आती हैं। इस धारा में जिक्र है कि वे गैर सरकारी संगठन, जिन्हें सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अधिक मात्रा में वित्तीय सहायता मिलती हो, वे भी इस एक्ट के दायरे में आएंगे। ऐसे में यदि राजनीतिक पार्टियां सरकार से टैक्स में रियायत, रियायती दर पर भूमि और भवन लेती हैं तो वे अपने आप पब्लिक अथॉरिटी हो जाएंगी।

आरटीआई कार्यकर्ता सुभाषचंद्र अग्रवाल और एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स के अनिल बेरवाल ने दायर दो याचिकाओं में जिक्र किया है कि आयकर रिटर्न आदि की दी गई जानकारियों को जानने का अधिकार आम जनता को है।

आयोग ने शिकायतकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत तथ्यात्मक और वैधानिक आधारों, दस्तावेजों और अनेक अदालती फैसलों में वर्णित सूक्ष्म कानूनी उत्पत्तियों की अवधारणाओं से सहमत होते हुए यही पाया गया कि राजनीतिक दलों को लोक प्राधिकारी की परिभाषा में रखा जाना जनहित में आवश्यक है। आयोग ने उन्हें आयकर में मिलने वाली छूट और बेहद रियायती दर पर जमीन, भवन के आबंटन के मद्देनजर पाया कि वे पर्याप्त रूप से वित्त पोषित माने जाएंगे। आयोग का मानना है कि सांगठनक दृष्टि से राजनीतिक दल एक तरह का नागरिक समाज है, साथ ही चुनाव और विधायिका के जरिये वे सरकार का नियंत्रण करते हैं।

संविधान समीक्षा आयोग ने मार्च, 2002 में सौंपी अपनी रिपोर्ट में यह सिफारिश की थी कि प्रत्याशियों और राजनीतिक दलों को आय-व्यय के कानूनी ऑडिट के तहत लाया जाए। साफतौर पर आयोग ने कहा कि उसके सामने उपस्थित पक्षकार (कांग्रेस, भाजपा, माकपा, भाकपा, राकांपा और बसपा) सूचनाधिकार अधिनियम के अन्तर्गत लोक प्राधिकारी की परिभाषा में आते हैं। एकल पीठों द्वारा दिये गए विपरीत निर्णयों को पूर्णपीठ ने रद्द कर दिया। राजनीतिक दलों को निर्देश दिये गए कि वे छह सप्ताह के अन्दर सूचनाधिकारियों की नियुक्ति करें। राजनीतिक दलों को धारा 4(1)(ख) का भी पालन करना होगा, यानी उन्हें आवश्यक जानकारियों को प्रकाशित करना होगा और प्रतिवर्ष उन्हें संशोधित करते रहना होगा। आयोग के निर्णय में राजनीतिक पार्टियों को लोक प्राधिकारी की संज्ञा या विशेषण देना तय हुआ है। दूरदर्शन के चैनलों पर राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों ने खुद को लोक **(शेष पृष्ठ 31 पर)**

स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन

❑ राम प्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

स्वामी विवेकानन्द का जन्म सन् 1863 ई. में कलकत्ता के एक क्षत्रिय परिवार में हुआ। संन्यासी बनने से पहले उनका नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। 17 वर्ष की आयु में जब वे कॉलेज के विद्यार्थी थे, श्री रामकृष्ण परमहंस से प्रभावित हुए। श्री नरेन्द्र दत्त दर्शन और कविता के सच्चे विद्यार्थी थे। उन्होंने पाश्चात्य दर्शन का अध्ययन किया। एक बार उनके प्रिंसिपल मि. हैस्टी ने कहा था, 'नरेन्द्र वास्तविक अर्थों में एक प्रतिभाशाली व्यक्ति है। मैंने दूर-दूर तक यात्रा की है परन्तु मुझे उस प्रतिभा और सम्भावनाओं का व्यक्ति नहीं मिला। यहां तक कि जर्मनी विश्वविद्यालयों के दर्शन के छात्रों में भी ऐसा विद्यार्थी नहीं मिला। एक दिन वह अवश्य जीवन में अपनी छाप छोड़ेगा।'

उन्होंने पश्चिम को सैद्धांतिक और भारत को व्यावहारिक वेदान्त की शिक्षा दी। उन्होंने साधारण लोगों को ऊंचा उठाने तथा उन्हें सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया। उन्होंने जाति, धर्म, लिंग आदि के भेदभाव के बिना उनको वेदान्त का अनुसरण करने की शिक्षा दी। सन् 1902 ई. में अपनी मृत्यु तक वे बार-बार इस बात पर जोर देते रहे कि भारतवासी इसलिए गरीब हैं तथा कमजोर हैं क्योंकि उन्होंने जीवन में वेदान्त को व्यावहारिक रूप नहीं दिया।

उन्होंने पश्चिम को सैद्धांतिक और भारत को व्यावहारिक वेदान्त की शिक्षा दी। उन्होंने साधारण लोगों को ऊंचा उठाने तथा उन्हें सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया। उन्होंने जाति, धर्म, लिंग आदि के भेदभाव के बिना उनको वेदान्त का अनुसरण करने की शिक्षा दी। सन् 1902 ई. में अपनी मृत्यु तक वे बार-बार इस बात पर जोर देते रहे कि भारतवासी इसलिए गरीब हैं तथा कमजोर हैं क्योंकि उन्होंने जीवन में वेदान्त को व्यावहारिक रूप नहीं दिया।

स्वामी विवेकानन्द सच्चे वेदान्ती थे। वे वेदान्त को पूर्ण रूप से अव्यैक्तिक मानते थे। वेदान्त शाश्वत है। इसे किसी व्यक्ति ने आरंभ नहीं किया। अत: यह किसी व्यक्ति विशेष पर केन्द्रित नहीं। स्वामी जी के विचार में द्वैतवाद विशिष्टा द्वैतवाद और अद्वैतवाद वेदान्त के विभिन्न रूप हैं। ये अपने में पूर्ण नहीं हैं। एक परिपक्व वेदान्ती के नाते स्वामी जी ने ईश्वर की तीन विशेषताएं बताई हैं।

1. वह असीम अस्तित्व है। 2. वह असीम ज्ञान है और 3. वह असीम आनन्द है।

ईश्वर सर्वव्यापक और अरूप है। वह संसार की सभी वस्तुओं में विद्यमान है। मनुष्य भी ईश्वर का रूप है। मनुष्य की उपासना ईश्वर की उपासना है। उन्होंने लिखा है 'ज्ञान और प्रेम का कोई अस्तित्व नहीं होता, प्रेम के बिना ज्ञान और ज्ञान के बिना प्रेम नहीं हो सकता। हम असीम अस्तित्व, असीम ज्ञान और असीम आनन्द का समन्वय चाहते हैं। यही हमारा लक्ष्य है। इस प्रकार आनंदपूर्ण समन्वय की प्राप्ति के लिये प्रयास करेंगे।'

स्वामी विवेकानन्द को मानव में गहरा विश्वास है। उन्होंने मानव की भव्यता और विविधता को पहचाना। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सभी जीव ही ईश्वर के मंदिर हैं परन्तु मानव शरीर सबसे ऊंचा मंदिर है। मंदिरों का ताजमहल है। धर्म के विषय में उनका मत यह था कि कोई भी धर्म छोटा-बड़ा नहीं होता। सभी धर्म एक ही लक्ष्य की ओर ले जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही धर्म में रहना चाहिये। उनकी सभी धर्मों के प्रति धारणा उदार है। उन्होंने लोगों को विश्वधर्म मानने पर बल दिया। धर्म परस्पर विरोधी नहीं है।

स्वामी विवेकानन्द ने विश्ववाद और आध्यात्मिक भ्रातृत्व पर बल दिया। संन्यासी अपनी आत्मा का अनुभव करने के पश्चात समस्त प्राणियों में अपनी आत्मा के दर्शन करता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार पूर्णता प्राप्त नहीं की जाती। वह तो पहले ही सबमें विद्यमान है। अमरता और आनन्द को प्राप्त नहीं किया जा सकता। वह पहले सी ही हमारे पास है।

स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के समाज सुधारक विश्व शिक्षक, व्यावसायिक संत थे। वे प्राचीन ज्ञान को जागृत करना चाहते थे। उन्हें वेदान्त में गहरा विश्वास था और वे आत्मज्ञान, आत्मनिर्भरता, साहस, एकाग्रता ब्रह्मचर्य व नारी शिक्षा पर उपदेश दिया करते थे। ❑

राष्ट्रीय एकता सम्प्रभुता पर पड़ सकता है असर

❑ ए. सूर्यप्रकाश

हाल ही में आए सभी ओपिनियन पोल द्वारा अगले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी के पतन और आंध्र प्रदेश में सूपड़ा साफ होने की भविष्यवाणी के बीच पार्टी ने अपना असली रंग दिखाना शुरू कर दिया है। चुनाव में अपनी संख्या बढ़ाने के लिये वह कुछ भी करने को आमादा दिख रही है। इससे प्रदेश की एकता और अखंडता खतरे में पड़ गई है।

पहले से ही कई नए राज्यों की मांग चल रही है। कांग्रेस के इस फैसले से पृथकतावादी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा और कमजोर केन्द्र इस तरह के आंदोलनों से उपजी ताकतों से निपटने में समर्थ नहीं होगा। करीब 60 वर्षों तक तेलंगाना मुद्दे को ठंडे बस्ते में डाले रहने के बाद कांग्रेस ने कई कारणों से गलत समय पर इस निर्णय को लिया है। यद्यपि 30 साल पहले इस तरह के छोटे राज्यों के गठन के औचित्य को सही ठहराया जा सकता था लेकिन अब नहीं। दर्जनों क्षेत्रीय दल उभर कर आए हैं और केन्द्र में अस्थायी गठबंधन चल रहे हैं। इन सबका सबसे भयावह परिणाम यह हुआ है कि इसने केन्द्र को बेहद कमजोर और लाचार कर दिया है। वास्तविकता यह है कि संस्कृति, धर्म और भाषा के आधार विविध समाज वाले इस देश को एकजुट बनाए रखने के लिए मजबूत केन्द्र की दरकार है। आजादी के बाद के शुरू के 30 वर्षों तक ऐसा चला लेकिन कांग्रेस के लगातार भ्रष्ट और अवसरवादी होने के चलते क्षेत्रीय नेताओं ने उसकी कमियों का लाभ उठाया। उन्होंने क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काया और कांग्रेस से लड़ने के लिए छोटी राजनीतिक इकाइयों के गठन को प्रोत्साहन दिया। नतीजा हम सबके सामने हैं।

1957 की दूसरी लोकसभा में 12 राजनीतिक दलों के संसद सदस्यों का प्रतिनिधित्व था। अब 50 वर्षों बाद लोकसभा में 42 राजनीतिक दल हैं। जिस तरह से चीजें चल रही है उससे हमें आगे 60 या उससे अधिक राजनीतिक दलों के लिये तैयार रहना चाहिये। 1996 से ही छोटे, क्षेत्रीय दलों के साथ केन्द्र में गठबंधन सरकार चल रही है। विगत 17 वर्षों का अनुभव बताता है कि उनकी अदूरदर्शी राजनीति के चलते शासन के स्तर में लगातार गिरावट हुई है। उनमें से कईयों ने प्रधानमंत्री को ब्लैकमेल किया है और अक्षमता एवं भ्रष्टाचार बढ़ा है। इन सबने केन्द्र सरकार और प्रधानमंत्री के ऑफिस को कमजोर किया है। ऐसे में 50 राज्यों के भारत और गठबंधन सरकारों में इस तरह की ब्लैकमेल राजनीति की कल्पना कीजिये?देश की एकता ही खतरे में पड़ जाएगी। ऐसे में तेलंगाना की मांग को स्वीकार करने का यह सर्वाधिक अनुपयुक्त समय है। छठे दशक में भाषाई आधार पर राज्यों का गठन किया गया। नेहरू सरकार ने फजल अली के नेतृत्व में राज्य पुनर्गठन (एसआरसी) आयोग गठित किया। 1955 में इस आयोग की आपत्तियों के बावजूद नेहरू सरकार ने एकीकृत तेलुगु राज्य आंध्र प्रदेश का गठन कर दिया। 55 वर्षों बाद संप्रग सरकार द्वारा गठित जस्टिस बीएन श्रीकृष्णा के नेतृत्व वाली कमेटी भी आंध्र प्रदेश के विभाजन के पक्ष में नहीं थी।

यद्यपि 30 साल पहले इस तरह के छोटे राज्यों के गठन के औचित्य को सही ठहराया जा सकता था लेकिन अब नहीं। दर्जनों क्षेत्रीय दल उभर कर आए हैं और केन्द्र में अस्थायी गठबंधन चल रहे हैं। इन सबका सबसे भयावह परिणाम यह हुआ है कि इसने केन्द्र को बेहद कमजोर और लाचार कर दिया है। वास्तविकता यह है कि संस्कृति, धर्म और भाषा के आधार विविध समाज वाले इस देश को एकजुट बनाए रखने के लिए मजबूत केन्द्र की दरकार है। आजादी के बाद के शुरू के 30 वर्षों तक ऐसा चला लेकिन कांग्रेस के लगातार भ्रष्ट और अवसरवादी होने के चलते क्षेत्रीय नेताओं ने उसकी कमियों का लाभ उठाया।

इस प्रकार 1955 और 2013 दोनों ही अवसरों पर कांग्रेस ने देश में इसके परिणामों की परवाह किये बिना वह किया जो उसके लिये मुफीद था। 1955 में राज्य पुनर्गठन आयोग ने कहा था कि अलगाव तभी किया जाना चाहिये जब यह लोगों और देश के कल्याण में हो। इस तरह के निर्णय लेने से पहले राष्ट्रीय एकता को ध्यान में रखना चाहिये। लेकिन पिछले चंद दिनों की घटनाओं के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि राष्ट्र की एकता और अखंडता कांग्रेस की प्राथमिकता में नहीं है। यह बस किसी भी तरह तेलंगाना क्षेत्र में कुछ लोकसभा सीटें जीतना चाहती हैं। ❑

भारत में रहने वाला हर मतावलम्बी हिन्दू : संत सीताराम

देशभर में ग्राम स्वराज की स्थापना और भाईचारे का संदेश देने के उद्देश्य से गांव-गांव पद यात्रा कर रहे संत सीताराम ने कहा कि इस देश में रहने वाला हर व्यक्ति हिन्दू है। चाहे वह किसी भी मत या परम्परा को निभाने वाला हो। वह चाहे शिव की पूजा करता हो या मस्जिद में नमाज पढ़ता हो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है।

राजस्थान के बदनोर गाँव के आदर्श विद्या मंदिर उच्च प्राथमिक विद्यालय में ईद के अवसर पर मुस्लिम मतावलम्बियों को सम्बोधित करते हुए संत सीताराम ने कहा कि जब कोई मुसलमान भाई मक्का मदीना जाता है तो उसे हिन्दू-मुसलमान कहकर सम्बोधित किया जाता है। मक्का-मदीना में जो वेशभूषा पहनने के लिए दी जाती है वैसी वेशभूषा भारत के दक्षिण के मंदिरों में सदियों से प्रचलित है। जिस तरह से सजदा किया जाता है तमिलनाडु के मंदिरों में भी ऐसे ही पूजा की जाती है। कहीं कोई फर्क नहीं है। सब कुछ मिलता-जुलता है।

उन्होंने कहा कि इस्लाम का अर्थ ही शांति है। उन्होंने कहा कि वे केरल व अन्य कई राज्यों में मुसलमान भाईयों से मिले। सबने एकसुर में उग्रवाद की भर्त्सना की। उनका कहना था कि कुछ गिने-चुने लोग पूरी कौम को बदनाम करने में लगे हुए हैं। उन्होंने मुस्लिम भाईयों से अपील की कि वे इन गिने चुने लोगों की सामने आकर कड़े शब्दों में भर्त्सना करें। जब अच्छे मुसलमान भाई एक साथ खड़े होंगे तो ये कुछ लोग अपने आप ही पीछे हट जाएंगे। राष्ट्रीय मुस्लिम मंच नाम से एक ऐसा ही संगठन है जो इस दिशा में कार्य कर रहा है। इसकी अब तक 25 राज्यों में कमेटियां स्थापित हो चुकी हैं।

अब तक केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गोवा, गुजरात राज्यों के गावों की पैदल यात्रा करने के बाद 3 जुलाई को राजस्थान में प्रवेश करने वाले 64 वर्षीय संत सीताराम ने कहा कि जिस तरह प्रकृति में हर जीव, जन्तु, पत्थर, पानी, पेड़ आदि को अलग-अलग बनाया गया है और वे सब मिल जुलकर आनंदमय होकर जीते हैं। उसी तरह मानव मात्र को भी अपने बाह्य स्वरूप को ध्यान न देते हुए सबके भीतर एक ही मालिक के ज्ञान को स्वीकार करते हुए शांतिमय जीवन जीना चाहिए।

9 अगस्त 2012 को कन्याकुमारी से पैदल ही भारत परिक्रमा यात्रा शुरू करने वाले संत सीताराम ने बाद में विद्यालय परिसर में ही पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि आर्थिक मंदी को भुगतने के बाद दुनिया के आर्थिक विशेषज्ञ अब मान रहे हैं कि भारत की वस्तु विनिमय आधारित प्राचीन अर्थव्यवस्था ही दुनिया को मंदी से उबार सकती है साथ ही ऐसे झटके भविष्य में न लगे इसका उपाय भी कर सकती है।

ग्राम स्वालम्बन ही उपाय

उन्होंने कहा कि गांवों के स्वावलंबी बनने में ही देश का भला है। उन्होंने कहा कि पहले गांव में ही स्वरोजगार के सारे माध्यम उपलब्ध होते थे। लुहार, बढ़ई, नाई, सुथार, सुनार, कुम्हार, किसान, शिक्षक, वैद्य सब अपना-अपना कार्य करते थे और एक दूसरे का सहयोग करते थे। किसी को शहर की ओर पलायन की जरूरत ही नहीं होती थी। लेकिन इस अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने स्वालम्बन की प्रक्रिया का नाश कर हमें गुलामी की ओर धकेल दिया है।

अंग्रेजी शिक्षा पद्धति विनाशकारी

पूर्व में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक रहे संत सीताराम ने कहा कि अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने देश का बहुत बड़ा नुकसान किया है। अंग्रेजी शिक्षा पद्धति व्यक्ति को मानव नहीं बल्कि दूसरे व्यक्ति का शोषण करने वाला बनाती है। वह व्यक्ति को पैसा बनाने वाली मशीन के रूप में तैयार करती है और बताती है कि वह दुनिया में पैसे से हर चीज को खरीद सकता है। उन्होंने कहा कि अंग्रेज तो चले गए लेकिन हमने अंग्रेजों को नहीं छोड़ा। अंग्रेजों की भाषा, पहनावा और व्यवहार ही हमारा विनाश का कारण बन रहा है।

जिसने गाय को त्याजा वो भी हत्यारा

संत सीताराम ने कहा कि गौ हत्या की सबसे पहले हत्या वो करता है जो उसका त्याग करता है। उसे सड़कों पर मरने के लिए छोड़ देता है। उन्होंने कहा कि लोग गऊ माता का त्याग नहीं करेंगे तो अपने आप ही गायों का संरक्षण हो जाएगा।

राजनीति ने किया बंटाधार

संत सीताराम ने कहा कि समाज के हर क्षेत्र में राजनीति के घुस आने से पूरे तंत्र का बंटाधार हो गया है। यही समाज के पतन का मूल कारण है। ❑

ठगी का माया जाल

अल्पावधि में पैसे दुगने करने वाली नाना प्रकार की फर्जी कम्पनियां बाजार में अपना जाल बिछाती हैं और लोगों की गाढ़ी कमाई गोल कर चम्पत हो जाती है। लोगों के पास हाथ मलने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहता। वास्तव में शातिर दिमाग ठग व कम्पनियां लोगों की मन:स्थिति को समझते हैं। आज हर कोई रातों-रात अमीर बनने की चाहत पाले बैठा है। भौतिकता की अंधी दौड़ में हर आदमी आगे निकलने की होड़ में है। लेकिन साधन नहीं है। जब इस तरह के प्रलोभन उसे मिलते हैं तो लालच में आकर वह इन ठगों का शिकार हो जाता है।

आज का युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान ने हर क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। दूर संचार और सूचना तंत्र के अत्याधुनिक उपकरणों ने दुनिया को संकुचित कर एक कस्बे का रूप दे दिया है। आज दुनिया के किसी भी कोने की खबरें व घटनाएं तत्काल हमारे घर पहुंच जाती हैं। विश्व के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से हम तुरंत बातचीत कर सकते हैं। मनुष्य ने इंटरनेट टी.वी., रेडियो, टेलीफोन, मोबाइल इत्यादि उपकरणों का प्रयोग कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की कहावत को वास्तविकता में बदल दिया है।

लेकिन इसे विडम्बना कहें कि जहां मनुष्य इन साधनों का सदुपयोग करता है वहीं दुरुपयोग करने से भी पीछे नहीं हटता। आज मनुष्य का स्वार्थ इन साधनों का उपयोग लोगों को ठगने के लिये कर रहा है। भले ही ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है लेकिन है जरूर। आप इंटरनेट पर कुछ देख रहे हैं कि तत्काल आपको संदेश आ जाता है बधाई हो! आप ने एक करोड़ डॉलर का ईनाम जीत लिया है। सिर्फ कुछ लाख अमुक बैंक के खाते में जमा कर दें और करोड़ डॉलर आपके। बिना कुछ किये इंटरनेट पर लाखों कमाएं। सिर्फ आपको कम्पनी को कुछ रुपये भेजने हैं। जहां आप इनकी चिकनी चुपड़ी बातों में आए तो कम्पनी मालामाल और आप कंगाल बन जाते हैं।

खुदाई में सोने की ईंटें मिलना और उन्हें औने-पौने दामों में आपको बेचने के निवेदन, मोबाइल फोन पर आम बात है। कोई आपकी लॉटरी निकाल रहा है तो कोई विदेश भ्रमण मुफ्त में करवाने के चक्कर में है। ऐसा नहीं कि यह सब यहां हो रहा है यह ठगी का जाल हर देश में व सब जगह है, ठग भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर के हैं।

अल्पावधि में पैसे दुगने करने वाली नाना प्रकार की फर्जी कम्पनियां बाजार में अपना जाल बिछाती हैं और लोगों की गाढ़ी कमाई गोल कर चम्पत हो जाती है। लोगों के पास हाथ मलने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहता।

वास्तव में शातिर दिमाग ठग व कम्पनियां लोगों की मन:स्थिति को समझते हैं। आज हर कोई रातों-रात अमीर बनने की चाहत पाले बैठा है। भौतिकता की अंधी दौड़ में हर आदमी आगे निकलने की होड़ में है। लेकिन साधन नहीं है। जब इस तरह के प्रलोभन उसे मिलते हैं तो लालच में आकर वह इन ठगों का शिकार हो जाता है। हर व्यक्ति जो विवेक से काम लेता है इनके जाल में नहीं फंसता। लेकिन अगर हजार में एक व्यक्ति भी इनके बहकावे में आ गया तो करोड़ों लोगों में एक-एक करके हज़ारों लोग इनके जाल में फंस जाते हैं। उनके वारे-न्यारे हो जाते हैं व दुकानदारी चलती रहती है। पैसे लुटा चुका व्यक्ति ठगे जाने और मूर्ख कहलाने की स्थिति में मन मसोस कर रह जाता है। सिर्फ एक प्रतिशत लोग ही मामले का खुलासा करते हैं वह भी जब पानी सिर से निकल चुका होता है।

नाना प्रकार के भ्रामक विज्ञापन लोगों के असाध्य रोगों को चुटकी में दूर करने के, शत्रु का समूल नाश गारंटी के साथ करने के दावे करते हैं। मोटे व्यक्ति को पतला, पतले को मोटा, नाटे को लम्बा और कृष्ण काया को चांदी की तरह चमकीला करने के फार्मूले टेलीविजन पर उपलब्ध हैं। सिर्फ आपको इतना करना है कि अपनी गाढ़ी कमाई का कुछ हिस्सा इनके हवाले कर देना है।

अत: प्रबुद्ध पाठकों से अनुरोध है कि इस तरह के भ्रामक निवेदनों से एवं विज्ञापनों से ठगी के चंगुल से हमेशा सावधान रहें व अन्य भोलीभाली जनता को जागरूक करें। रातों रात करोड़पति बनने के असंवैधानिक फार्मूलों पर गौर न करें और अगर कोई ऐसा गिरोह नजर में हो तो प्रशासन को अवश्य सूचित करें ताकि भोली भाली जनता को ठगने से बचाया जा सके। ❑

– **बी.एल. कौंडल**, चुराग, मंडी

धर्मग्रन्थों के प्रसारक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार

भारत ही नहीं अपितु विश्व भर में हिन्दू धर्मग्रन्थों को शुद्ध पाठ एवं छपाई में बहुत कम मूल्य पर पहुंचाने का श्रेय जिस विभूति को जाता है, उन श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार (भाई जी) का जन्म शिलांग में 17 सितम्बर, 1892 को हुआ था। उनके पिता श्री भीमराज तथा माता श्रीमती रिखीबाई थीं। दो वर्ष की अवस्था में ही इनकी माता जी का देहान्त हो गया।

केवल 13 वर्ष की अवस्था में भाई जी ने बंग-भंग से प्रेरित होकर स्वदेशी व्रत लिया और फिर जीवन भर उसका पालन किया। केवल उन्होंने ही नहीं, तो उनकी पत्नी ने भी इस व्रत को निभाया और घर की सब विदेशी वस्तुओं की होली जला दी। भाई जी के तीन विवाह हुए। प्रथम दो पत्नियों का जीवन अधिक नहीं रहा, पर तीसरी पत्नी ने उनका जीवन भर साथ दिया।

हनुमान प्रसाद ने श्रीमद्भगवद्गीता के भी अनेक संस्करण निकाले। इसके साथ ही 11 उपनिषदों के शंकर भाष्य, वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण आदि धर्मग्रन्थों को लागत मूल्य पर छापकर उन्होंने हिन्दू समाज की अनुपम सेवा की। वे ऐसी व्यवस्था भी कर गए, जिससे उनके बाद भी यह कार्य चलता रहे।

1912 मे वे अपना पुश्तैनी कारोबार सम्भालने के लिये कोलकाता आ गए। 1914 में उनका सम्पर्क महामना मदनमोहन मालवीय जी से हुआ और वे हिन्दू महासभा में सक्रिय हो गए। 1915 में वे हिन्दू महासभा के मंत्री बने। कोलकाता में भाई जी का सम्पर्क पंडित गोविन्द नारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, झाबरमल शर्मा, लक्ष्मण नारायण गर्दे, बाबूराव विष्णु पराड़कर जैसे सम्पादक एवं विद्वान् साहित्यकारों से हुआ।

अनुशीलन समिति के सदस्य के नाते उनका सम्बंध डॉ. हेडगेवार अरविन्द घोष, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, विपिनचन्द पाल, ब्रह्मबान्धव उपाध्याय आदि स्वतंत्रता सेनानियों तथा क्रांतिकारियों से लगातार बना रहता था। जब वे रोडा कम्पनी में कार्यरत थे, तो उन्होंने विदेशों से आई रिवाल्वरों की एक पूरी खेप क्रांतिकारियों को सौंप दी। इस पर उन्हें राजद्रोह के आरोप में दो साल के लिये अलीपुर जेल में बंद कर दिया गया।

1918 में भाई जी व्यापार के लिये मुम्बई आ गए। यहां सेठ जयदयाल गोयन्दका के सहयोग से अगस्त, 1926 में धर्मप्रधान विचारों पर आधारित 'कल्याण' नामक मासिक पत्रिका प्रारम्भ की। कुछ वर्ष बाद गोरखपुर आकर उन्होंने गीताप्रेस की स्थापना की। इसके बाद 'कल्याण' का प्रकाशन गोरखपुर से होने लगा। 1933 में श्री चिम्मनलाल गोस्वामी के सम्पादन में अंग्रेजी में 'कल्याण कल्पतरू' मासिक पत्रिका प्रारम्भ हुई।

ये सभी पत्रिकाएं आज भी बिना विज्ञापन के निकल रही हैं। गीताप्रेस ने बच्चों, युवाओं, महिलाओं, वृद्धों आदि के लिये बहुत कम कीमत पर संस्कारक्षम साहित्य प्रकाशित कर नया उदाहरण प्रस्तुत किया।

हिन्दू धर्मग्रन्थों में पाठ भेद तथा त्रुटियों से भाई जी को बहुत कष्ट होता था। अत: उन्होंने तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस की जितनी हस्तलिखित प्रतियां मिल सकी, एकत्र कीं और विद्वानों को बैठाकर 'मानस पीयूष' नामक उनका शुद्ध पाठ, भावार्थ एवं टीकाएं तैयार कराईं। फिर इन्हें कई आकारों में प्रकाशित किया जिससे हर कोई उससे लाभान्वित हो सके। मुद्रण की भूल को कलम से शुद्ध करने की परम्परा भी उन्होंने गीता प्रेस से प्रारम्भ की। उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता के भी अनेक संस्करण निकाले। इसके साथ ही 11 उपनिषदों के शंकर भाष्य, वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण आदि धर्मग्रन्थों को लागत मूल्य पर छापकर उन्होंने हिन्दू समाज की अनुपम सेवा की। वे ऐसी व्यवस्था भी कर गए, जिससे उनके बाद भी यह कार्य चलता रहे। 22 मार्च, 1971 को उनका शरीरान्त हुआ। ❑

(पृष्ठ 26 का शेष)

प्राधिकारी बताए जाने पर हाय तौबा मचाई। सरकार का गठन भी विधायिका में उनकी ताकत के आधार पर होता है। इसलिये उन पर सूचनाधिकार कानून लागू न होने की दलील नहीं मानी जा सकती। राजनीतिक दलों को इस कानून के तहत मांगी गई सूचनाएं एक माह के भीतर देनी होगी। इसके लिये उन्हें सूचनाधिकारी की नियुक्ति करनी होगी। राजनीतिक दलों को सूचनाधिकार के तहत लाने का केन्द्रीय सूचना आयोग का फैसला दूरगामी महत्त्व का है। धन-बल का विभिन्न दलों में बढ़ते वर्चस्व के कारण इंसाफ अब बेमानी हो गया। ❑

(लेखक विश्लेषक व वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

इंडोनेशिया द्वारा अमेरिका को सरस्वती की प्रतिमा भेंट

दुनिया में मुसलमानों की सबसे बड़ी आबादी वाले देश इंडोनेशिया ने अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में डीसी को शिक्षा और ज्ञान की हिन्दू देवी सरस्वती की 16 फुट ऊंची प्रतिमा भेंट की है। कमल के एक फूल पर खड़ी देवी सरस्वती की यह प्रतिमा वाशिंगटन में स्थित भारतीय दूतावास से कुछ ही दूरी पर लगाई गई है। इस प्रतिमा के पास ही महात्मा गांधी की एक मूर्ति लगी है जो यहां कई साल पहले स्थापित की गई थी।

व्हाइट हाउस से लगभग एक मील की दूरी पर लगाई गई इस मूर्ति का अधिकारिक रूप से लोकार्पण किया जाना बाकी है लेकिन यह पहले ही शहर के लोगों और यहां आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन गई है।

इंडोनेशिया दूतावास के एक प्रवक्ता ने बताया कि सरस्वती हिन्दुओं की देवी है। इंडोनेशिया की कुल आबादी में हिन्दुओं की तादाद महज तीन फीसदी है। इंडोनेशिया के बाली में मुख्य रूप से इसी धर्म के लोग रहते हैं और इंडोनेशिया दुनिया का सबसे बड़ा मुसलमान आबादी वाला देश है। सरस्वती की मूर्ति का चयन किसी धार्मिक आधार पर नहीं किया गया बल्कि इसका चयन प्रतीकात्मक मूल्यों पर किया गया जो व्यापक सहयोग के तहत इंडोनेशिया-अमेरिका के सम्बंध, विशेषकर शिक्षा और लोगों के बीच सम्पर्क के समानांतर हैं।

वाशिंगटन डीसी को दिये गए इस सांस्कृतिक उपहार के निर्माण का काम इस साल मध्य अप्रैल में शुरू किया गया था और केवल पांच हफ्तों में इसे पूरा कर लिया गया। 4.9 मीटर ऊंची इस मूर्ति का निर्माण बाली के पांच मूर्तिकारों ने किया जिनका नेतृत्व आई न्योमन सुदर्व नाम के मूर्तिकार ने किया। प्रवक्ता ने कहा कि यह मूर्ति बाली की कला को दर्शाती है।

मूर्ति में देवी सरस्वती के चार हाथ दर्शाए गए हैं जो अलग-अलग संदेश देते हैं। इनमें से एक हाथ में एक अक्षमाला है जो ज्ञान की अनवरत प्रक्रिया को दर्शाता है, दो हाथ वीणा बजा रहे हैं जो कला व संस्कृति की प्रतीक हैं और तीसरे में एक पांडुलिपि है जो ज्ञान के स्रोत को दिखाता है। साथ ही सरस्वती जिस कमल पर खड़ी है, वह ज्ञान की पवित्रता को दर्शाता है और हंस ज्ञान से मिलने वाले विवेक का प्रतीक है। प्रवक्ता ने कहा कि यह मूर्ति सांस्कृतिक प्रतीकों का रूप है। हम उम्मीद करते हैं कि इसकी स्थापना से हमें अपने विविधतापूर्ण समाज में आपसी समझ की अहमियत को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। ❑

रूस को अल्पसंख्यकों की आवश्यकता नहीं : पुतिन

रूस के चेचन्या प्रान्त के मुसलमानों की कुछ अलगाववादी मांगें हैं। हाल ही में अमरीका के बोस्टन नगर में जो बम धमाके हुए, उन्हें कराने वाले चेचन्या के ही मुसलमान थे। रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमिर पुतिन ने 4 फरवरी, 2013 को रूस की संसद ड्यूमा में दिये भाषण में जो इशारा किया है, उसका दीर्घकालिक महत्व है। उन्होंने कहा, 'रूस में रूसी रहते हैं, कोई भी अल्पसंख्यक समुदाय, यदि रूस में रहना चाहता है, रूस में काम करने की उसकी इच्छा है और रूस का अन्न भक्षण करता है, तो उसे रूसियों के समान ही बोलना होगा और रूस के कानून का आदर करना होगा। उन्हें शरीयत का कानून पसंद है तो हमारी उनसे विनती है कि वे जहां वह कानून लागू है, उस स्थान पर जाए। रूस को अल्पसंख्यकों की आवश्यकता नहीं। अल्पसंख्यकों को रूस की आवश्यकता है। हम उन्हें कोई विशेषाधिकार नहीं देंगे, या उनकी इच्छा के अनुरूप कानून नहीं बनाएंगे, फिर वे भेदभाव के नाम से कितना ही शोर क्यों न मचाएं।' ❑

कोलंबिया में अक्तूबर हिन्दू जागरुकता माह घोषित

अमेरिका के राज्य कैलिफोर्निया में अक्तूबर महीने को हिन्दू जागरूकता माह घोषित किया गया है। यह अमेरिका के विकास व निर्माण में हिन्दू समाज के अतुलनीय योगदान के चलते घोषणा की गई है। कैलिफोर्निया की सीनेट में बहुमत की नेता श्रीमती एलेन कार्बेट ने इस सम्बंध में प्रस्ताव तैयार किया है। अपने प्रस्ताव में उन्होंने कहा है कि कैलिफोर्निया में निवास कर रहे 3.70 लाख हिन्दू परिवारों ने यहां की शिक्षा, विज्ञान, टैक्नोलॉजी, सुरक्षा, कला तथा संस्कृति के विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। उन्होंने इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द जी को भी याद किया जिनकी पूरे विश्व में 150वीं जयंती मनाई जा रही है। स्वामी जी के बारे में कैलिफोर्निया की संसद ने कहा है कि स्वामी जी ने शिकागो धर्म सम्मेलन में दुनिया को हिन्दू धर्म से परिचय करवा कर विश्व पर बहुत बड़ा उपकार किया था। ❑

अमृतत्व की किरण

एक राजा था। वह एक दिन अपने वजीर से नाराज हो गया और उसे एक बहुत बड़ी मीनार के ऊपर कैद कर दिया। एक प्रकार से यह अत्यन्त कष्टप्रद मृत्युदण्ड ही था। न तो उसे कोई भोजन पहुंचा सकता था और न उस गगनचुम्बी मीनार से कूदकर उसके भागने की कोई संभावना थी।

जिस समय उसे पकड़कर मीनार पर ले जाया जा रहा था, लोगों ने देखा कि वह जरा भी चिंतित और दुखी नहीं है, उल्टे सदा की भांति आनंदित और प्रसन्न है। उसकी पत्नी ने रोते हुए उसे विदा दी और पूछा, 'तुम इतने प्रसन्न क्यों हो?'

उसने कहा, 'यदि रेशम का एक बहुत पतला सूत भी मेरे पास पहुंचाया जा सकता तो मैं स्वतंत्र हो जाऊंगा। क्या इतना-सा काम भी तुम नहीं कर सकोगी?'

उसकी पत्नी ने बहुत सोचा, लेकिन इतनी ऊंची मीनार पर रेशम का पतला धागा पहुंचाने का कोई उपाय उसकी समझ में न आया। तब उसने एक फकीर से पूछा। फकीर ने कहा, 'भृंग नाम के कीड़े को पकड़ो। उसके पैर में रेशम के धागे को बांध दो और उसकी मूंछों के बालों पर शहद की एक बूंद रखकर उसका मुंह चोटी की ओर करके मीनार पर छोड़ दो।'

उसी रात को ऐसा किया गया। वह कीड़ा सामने मधु की गंध पाकर, उसे पाने के लोभ में, धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा और आखिर उसने अपनी यात्रा पूरी कर ली। रेशम के धागे का एक छोर कैदी के हाथ में पहुंच गया। रेशम का यह पतला धागा उसकी मुक्ति और जीवन बन गया। उससे फिर सूत का धागा बांधकर ऊपर पहुंचाया गया, फिर सूत के धागे से डोरी और डोरी से मोटा रस्सा। उस रस्से के सहारे वह कैद से बाहर हो गया।

सूर्य तक पहुंचने के लिए प्रकाश की एक किरण बहुत है। वह किरण किसी को पहुंचानी भी नहीं है। वह तो हर एक के पास मौजूद है। ❑

बस ड्राईवर और चर्च का पादरी मरने के बाद भगवान के पास पहुंचे।

वहां ड्राइवर को स्वर्ग और पादरी को नर्क भेज देने का आदेश दिया गया।

यह सुनकर पादरी बोला, 'ये कैसा न्याय है?'

ये ड्राइवर शराब पीकर गाड़ी चलाता था, खराब आदमी था, इसे स्वर्ग???

...और हे प्रभु! मैंने सारी जिन्दगी आपके गुणगान गाकर और लोगों को समझाकर गुजारे, मुझे नर्क, गलत है ये। 'जवाब में प्रभु बोले, 'जब तुम चर्च में बोलते थे तो लोग ऊब सो जाते थे। जब ये ड्राइवर पीकर गाड़ी चलाता था तो बस में बैठे सब लोग डरकर मुझे सच्चे मन से याद करते थे...।

भीतरी और बाहरी सम्पदा

एक महर्षि थे। उनका नाम था कणाद। किसान जब अपना खेत काट लेते थे तो उसके बाद जो अन्न-कण पड़े रह जाते थे, उन्हें बीन करके वे अपना जीवन चलाते थे। इसी से उनका यह नाम पड़ गया था। उन जैसा दरिद्र कौन होगा! देश के राजा को उनके कष्ट का पता चला। उसने बहुत-सी धन-सामग्री लेकर अपने मन्त्री को उन्हें भेंट करने भेजा। मंत्री पहुंचा तो महर्षि ने कहा, 'मैं सकुशल हूं। इस धन को तुम उन लोगों में बांट दो, जिन्हें इसकी जरुरत है।'

इस भांति राजा ने तीन बार अपने मंत्री को भेजा और तीनों बार महर्षि ने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया।

अंत में राजा स्वयं उनके पास गया। वह अपने साथ बहुत-सा धन ले गया। उसने महर्षि से प्रार्थना की कि वे उसे स्वीकार कर लें, किन्तु वे बोले, 'उन्हें दे दो, जिनके पास कुछ नहीं है। मेरे पास तो सबकुछ है।'

राजा को विस्मय हुआ! जिसके तन पर एक लंगोटी मात्र है, वह कह रहा है कि उसके पास सब कुछ है। उसने लौटकर सारी कथा अपनी रानी से कही। वह बोली, 'आपने भूल की। ऐसे साधु के पास कुछ देने के लिए नहीं, लेने के लिए जाना चाहिए।'

राजा उसी रात महर्षि के पास गया और क्षमा मांगी।

कणाद ने कहा, 'गरीब कौन है?मुझे देखो और अपने को देखो। बाहर नहीं, भीतर। मैं कुछ भी नहीं मांगता, कुछ भी नहीं चाहता। इसलिए अनायास ही सम्राट हो गया हूं।' एक सम्पदा बाहर है, एक भीतर है। जो बाहर है, वह आज या कल छिन ही जाती है। इसलिए जो जानते हैं, वे उसे सम्पदा नहीं, विपदा मानते हैं। जो भीतर है, वह मिलती है तो खोती नहीं। उसे पाने पर फिर कुछ भी पाने को नहीं रह जाता। ❑

पिंजरे के पंछी

चंद्र प्रकाश के चार साल के बेटे को पंछियों से बेहद प्यार था। वह अपनी जान तक न्योछावर करने को तैयार रहता। ये सभी पंछी उसके घर के आंगन में जब कभी आते तो वह उनसे भरपूर खेलता। उन्हें जी भर कर दाने खिलाता। पेट भर कर जब पंछी उड़ते तो उसे बहुत अच्छा लगता।

एक दिन बेटे ने अपने पिता जी से अपने मन की एक इच्छा प्रकट की। 'पिता जी, क्या चिड़िया, तोता और कबूतर की तरह मैं नहीं उड़ सकता?'

'नहीं।' पिता जी ने पुत्र को पुचकारते हुए कहा।

'क्यों नहीं?'

'क्यों कि बेटे, आपके पंख नहीं हैं।'

'पिता जी, क्या चिड़िया, तोता और कबूतर मेरे साथ नहीं रह सकते हैं? क्या शाम को मैं उनके साथ खेल नहीं सकता हूं?'

'क्यों नहीं बेटे?हम आज ही आपके लिए चिड़िया, तोता औ कबूतर ले आएँगे।

जब जी चाहे उनसे खेलना। हमारा बेटा हमसे कोई चीज माँगे और हम नहीं लाएँ, ऐसा कैसे हो सकता है?'

शाम को जब चन्द्र प्रकाश घर लौटे तो उनके हाथों में तीन पिंजरे थे- चिड़िया, तोता और कबूतर के। तीनों पंछियों को पिंजरों में दुबके पड़े देखकर पुत्र खुश न हो सका।

बोला- 'पिता जी, ये इतने उदास क्यों हैं?'

'बेटे, अभी ये नये-नये मेहमान हैं। एक-दो दिन में जब ये आप से घुल मिल जाएंगे तब देखना इनको उछलते-कूदते और हंसते हुए?' चन्द्र प्रकाश ने बेटे को तसल्ली देते हुए कहा।

दूसरे दिन जब चन्द्र प्रकाश काम से लौटे तो पिंजरों को खाली देखकर बड़ा हैरान हुए। पिंजरों में न तो चिड़िया थी और न ही तोता और कबूतर। उन्होंने पत्नी से पूछा-'ये चिड़िया, तोता और कबूतर कहाँ गायब हो गये हैं?'

'अपने लाडले बेटे से पूछिए।' पत्नी ने उत्तर दिया।

चन्द्र प्रकाश ने पुत्र से पूछा-'बेटे, ये चिड़िया, तोता और कबूतर कहाँ हैं?'

'पिता जी, पिंजरों में बंद मैं उन्हें देख नहीं सका। मैंने उन्हें उड़ा दिया है।' अपनी भोली जबान में जवाब देकर बेटा बाहर आंगन में आकर आकाश में लौटते हुए पंछियों को देखने लगा।

सच है जिन्हें हम प्यार करते हैं सच्ची खुशी उनको खुश देखने में है। उन्हें बाँधकर अपने सामने रखने में नहीं। ❑

हंसते-हंसते

☺ हवाई जहाज में एक एयर होस्टेस ने लालू से पूछा, 'सर आप vegetarian हैं या non-vegetarian?

लालू : मैं इंडियन हूँ।

एयर होस्टेस : नहीं सर मैं पूछ रही हूँ आप मांसाहारी हैं या शाकाहारी?

लालू : अरे ससुरी ना शाकाहारी ना मांसाहारी हम हैं बिहारी।

☺ पुलिसवाला, शराबी से, 'रात के 1 बजे तुम कहां जा रहे हो?'

शराबी : मैं शराब पीने के दुष्परिणाम पर भाषण सुनने जा रहा हूं।

पुलिसवाला : इतनी रात में तुम्हें कौन भाषण देगा?

शराबी : मेरी बीबी।

☺ जेलर, संता से : तुम्हें कल सुबह पांच बजे फांसी दे दी जाएगी।

संता : हा..हा...हा

जेलर : क्यों हंस रहे हो?

संता : मैं तो उठता ही सुबह नौ बजे हूं।

प्रश्नोत्तरी

1. भारतीय स्टेट बैंक का पुराना नाम क्या था?
2. काकोरी कांड कब हुआ?
3. महात्मा बुद्ध के उत्तराधिकारी कौन थे?
4. भारत का मानक समय क्या है?
5. चाणक्य कहां का मूल निवासी था?
6. शिवाजी महाराज के गुरु कौन थे?
7. शिमला में स्थित आईस स्केटिंग रिंग की स्थापना कब हुई?
8. अटल बिहारी वाजपेयी जी का हि.प्र. में निवास स्थान कहां है?
9. उत्तर भारत का प्रसिद्ध शनि मंदिर कहां पर है?
10. एशिया का सबसे बड़ा मत्स्य केन्द्र कहां है?

मातृवन्दना संस्थान शिमला द्वारा आयोजित विवेकानन्द संदेश यात्रा 4 से 8 सितम्बर 2013

भारत जागो ! विश्व जगाओ !!
१५०
१८६३-२०१३
स्वामी विवेकानन्द सार्ध शती समारोह

स्वामी विवेकानन्द को भारत में सब कोई जानते हैं। नरेन्द्र विश्वनाथ दत्त (स्वामी विवेकानन्द) का जन्म 12 जनवरी 1863 में हुआ था। उनके महाविद्यालय में पढ़ते समय ही उनके पिताजी का निधन होने से सारे परिवार को दु:ख और दरिद्रता का सामना करना पड़ा। बेकारी, गरीबी और भूख से ग्रस्त ऐसी स्थिति में भी ईश्वर को जानने की उनकी इच्छा तीव्र बनी रही। इस स्थिति में उनका संपर्क श्रीरामकृष्ण परमहंस के साथ हुआ। उन्होंने विवेकानन्द का मार्गदर्शन किया। विवेकानन्द के मन में विचार आया कि क्या करने से भारतवासियों की स्थिति में सुधार होगा? क्या करने से इनके लिए रोटी, कपड़ा, मकान आदि मूलभूत आवश्यकताएं सहज उपलब्ध होंगी? क्या करने से इनमें विश्वास जगेगा? इस तरह दुखी, चिंतित, अस्वस्थ मन से वे घूमते-घूमते कन्याकुमारी पहुंचे। भारत का उत्थान कैसे होगा यह एक ही विचार उनके मन में भरा था। मैं क्या कर सकता हूं? मुझे क्या करना है? इसी विचार में वे समुद्र के बीच स्थित श्रीपाद शिला पर तैरते हुए गए। तीन दिन पूरे 72 घंटे वे वहां ध्यानस्थ रहे। भारत के अतीत का गौरव, सुख-समृद्धि और वर्तमान की दीन, गुलामी की अवस्था उनकी नज़र के सामने थी। उन्होंने भारत की शक्ति के बारे में सोचा।

समाज के कल्याण का कार्य करना ही ईश्वर प्राप्ति है। मन:शान्ति का यही मार्ग है। यही अध्यात्म है, धर्म है। इसे अपने और सभी के जीवन में लाना है। यह कार्य युवकों के द्वारा ही होगा यह सोचकर अमेरिका से भारत लौटकर उन्होंने कोलम्बो से अल्मोड़ा तक प्रवास किया। अपने व्याख्यानों से देशभर के युवकों को प्रेरित किया। उनके विचार ही अनेक युवकों के जीवन सूत्र बने। वे कहते थे- **"मेरा विश्वास आधुनिक युवा पीढ़ी में है। इन्हीं में से मेरे कार्यकर्ता आएंगे और सिंह के समान पुरुषार्थ कर सभी समस्याओं का समाधान करेंगे।"**

ऐसा था उनका युवकों पर विश्वास। महिलाएं शक्तिस्वरूपा हैं। वे कहते थे- **"ऐसा क्यों है कि हमारा देश सभी देशों में कमजोर और पिछड़ा है? क्योंकि यहां शक्ति की अवहेलना होती है, शक्ति का अपमान होता है।"**

शिक्षा के बारे में उन्होंने कहा- **"हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे।"**

स्वामी विवेकानन्द का कार्य आज भी चल रहा है। अनेक व्यक्ति, संस्थाएं और संगठन इस कार्य में लगे हैं। उसी का परिणाम है कि भारत जाग रहा है, विश्वास के साथ खड़ा हो रहा है। बहुत सारा अच्छा हुआ है-हो रहा है।

परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। जीवन की, विकास की दिशा में आज भी पश्चिमी अनुकरण हो रहा है। अभी बहुत सारे देहातों में, झुग्गियों में हालात अच्छे नहीं है। व्यक्तिवादिता हावी होने के कारण अच्छाई का, नैतिकता का ह्रास दिख रहा है। इसलिए स्वामी विवेकानन्द ने जो कार्य शुरू किया है उसे समझना होगा, आगे बढ़ाना होगा।

''स्वामी विवेकानन्द की 150 वीं जयंती''- यह उचित अवसर है कि स्वामी जी का, उनके विचारों का परिचय युवकों, किशोरी, महिलाओं, ग्राम तथा गिरिवासिओं, समाज के प्रबुद्ध वर्ग को, सभी को हो।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मातृवन्दना संस्थान द्वारा विवेकानन्द संदेश यात्रा का आयोजन किया गया जो 4 से 8 सितम्बर तक चली। इस संदेश यात्रा द्वारा प्रदेश के 8 जिलों में जगह-जगह कार्यक्रम कर स्वामी विवेकानन्द के विचारों से आम जनता को अवगत करवाया गया। मातृवन्दना संस्थान द्वारा प्रकाशित जागरण पत्रिका मातृवन्दना अपने हर अंक में राष्ट्रीयवादी विचारों, सामाजिक जागरूकता तथा देश के ज्वलंत विषयों एवं स्वामी विवेकानन्द जैसी महान विभूतियों के वैचारिक दृष्टिकोण को आप से सांझा करने में हमेशा प्रयासरत है।

पढ़े देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

मातृवन्दना

HP/48/SML (upto 31-12-2014) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

MIT Group of Institutions

Best College of Himachal Pradesh

B.Tech. ✔ CSE ✔ ECE ✔ CE ✔ ME ✔ EEE ✔ EE

Diploma ✔ CSE ✔ ECE ✔ CE ✔ ME ✔ EE ✔ AE

Hotel Management & Catering Technology

Film Technology & TV Production

Fashion Designing & Garment Technology

ADMISSION OPEN

Best Placement *Record*

Limited Seats!

Apply Now!

MIT Group of Institutions

MIT Knowledge Valley

Bani (Una-Hamirpur Express Way), Barsar Distt. Hamirpur (H.P.)
Ph.: (91) 1972-215234, 200534, Fax: 215334
City Office: Above Aryan Store
DC Office Chowk, Hamirpur Ph.: (91) 1972-225588
Website: www.mithmr.com

ADMISSION HELPLINES 9805034000, 9805134000, 9805516027, 9805516003, 9805516018, 9805516001, 9805516028, 9805516031

Designed by: New Era Graphics, Shimla Ph.: 2628276

मातृवन्दना प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004, से प्रकाशित।